Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 15 v.d 05 30 eb 2016 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

राष्ट्रवाद बनाम भारत माता की जय

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

राष्ट्रवाद की विचाराधारा का सबसे पहले 1866 में उदगम हुआ जब पुरान शास्त्रों की लंबी सूचि में एक अन्य पुरान-''आदि भारती'' को जोड़ा गया और इसके द्वारा 1873 में प्रदर्शित किए गए शो में माता को जनजातिय औरत बताया गया जिसका वर्णन बाद में 1880 में बंकिंगचंद्र चटोपाध्याय के उपन्यास 'आनंदमठ' में भी मिलता है। इसके अंदर अखबारों की खबरों एवं टिप्पणियों भी शामिल की जायें तो भी अधूरा है लेकिन आज 70 प्रतिशत लोग भूखे मर रहे हैं।''भारत माता की जय नहीं, गरीब के लिए तो रोटी ही भगवान है।'' राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी यह माना है।

महात्मा गांधी, बी०आर० अंबेडकर, सरदार पटेल, मुलाना आजाद व अन्य उच्च कोटी के नेताओं ने राष्ट्र के लोकतंत्र, अनेकतावाद, धर्म निरपेक्षता व राजनैतिक न्याय के चार सतंभों के साथ-साथ राष्ट्रवाद के भारतीय सिद्धांत की व्याख्या करके लिखा है कि ''न नक्सलवाद, न फासीवाद, हिदूंस्तान जिंदाबाद'' ही सच्ची राष्ट्रीयता है। वास्तव में भारतीय स5यता के फलने-फूलने के पीछे यहां की विभिन्न संस्कृतियों के शुद्ध वातावरण व विचारों का समन्वय रहा है लेकिन आज विभाजक राजनैतिक सोच द्वारा धर्म की आड़ में राष्ट्रवाद को केवल हिंदूत्व तक सीमित किया जा रहा है जो कि भारत वर्ष के नाम को एक चुनौती है। शहीद भगत सिंह व उसके साथियों ने भी सामाजिक व आर्थित शोषण के खिलाफ राष्ट्रहित में इंकलाब जिंदाबाद का नारा दिया था लेकिन यह राजनीति से प्रेरित नहीं था। आज 21वीं सदी में भी राज्यों द्वारा हिंदू राष्ट्र का नाम देकर स्वयं को एक अलग धार्मिक पहचान दी जा रही है जो कि राष्ट्रहित में नहीं है। हर भारतीय के लिए 'भारत माता की जय' को राष्ट्रीयता का करार दिया जाता है। इसी प्रकार आज जो व्यक्ति राष्ट्रवादी होने का दावा करते हैं, महात्मा गांधी जी के 30 वर्षों के आजादी के संघर्ष में उनका कहीं नाम नहीं मिलता। ये व्यक्ति ब्रिटिश राज का समर्थन करते अपने घरों में सुरक्षित थे जबकि अनेकों बेनाम भारतीयों ने लाठी, गोली व जेलों का सामना किया।

स्वतंत्रता से पूर्व नेताजी सुभाष चंद्र बोस की पार्टी आजाद हिंद सेना द्वारा भी वंदे मातरम व इंकलाब जिंदाबाद का नारा दिया गया था और अब भी जय हिंद राष्ट्र का सर्वमान्य जयघोष था और हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले से प्रधानमंत्री के भाषण का जयहिंद के साथ समापन होता है लेकिन आज की सरकारों द्वारा इसको बदलकर भारतमाता का नाम देकर अधिक देशभक्त बताया जा रहा है। प्रसिद्ध लेखक डा० सैमुवल जोहन्सन के अनुसार किसी राष्ट्र के मान-स6मान व बर्चस्व हेतु राष्ट्रभक्ति अंतिक यंत्र होता है जबकि वर्तमान सरकार द्वारा इसको सामुदायिकरण व राजनैतिक हितों के लिए प्रयोग किया जा रहा है।

यहां तक कि विश्व मानव कल्याण हेतू भगवान कृष्ण द्वारा दिया गया पावन गीता का उपदेश महज हिंदू, भगवां करार दे दिया जबकि संपूर्ण श्रीमदभगवद गीता में कहीं भी हिंदू धर्म के कल्याण का जिक्र नहीं है अपितू विश्व मानव कल्याण का जिक्र कई बार हुआ है।

'k"k i;t&2 ij

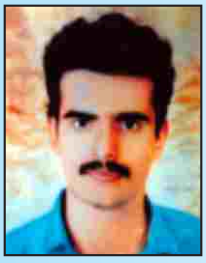

Bhai Surender Singh MALIK Memorial All India Essay Writing Competition ON 04-7-2016

Jat Sabha, Chandigarh has been organising **'Bhai Surender Singh Malik Memorial All India on the Spot Essay Writing Competition'** for the College, University & 10th, 10+1 and 10+2 students every year. This competition is dedicated to the students in the sweet and everlasting memory of late Sh. Surinder Singh Malik, Electronic Engineer, who met with a Fatal car accident in the prime of his life (23 years) on June 5, 1993 and succumbed to the injuries on July 19, 1993. Rani of Jhansi died at the age of 23. Alexander the great died at the age of 23, Florence Nightingale died at the age of 23 and Shefali Chaudhary too died at the age of 23. We are thus reminded of the sad saying "Those whom God loves, die young. During his short of life, he had held high principles and moral values and the award is to envisage his high principles of life. The award will only go to the deserving and meritorious students whose essays are evaluated best by the judges. To keep his memory alive and to develop faith and trust in the younger generation, this competition is being held every year. Inspite of all the odds an effort has been made to show his silver lining in the black clouds to the students so that they develop a belief in themselves by winning the award. The competition is financed by Bhai Surender Singh Malik Institute of Medical Science and Educational Research, Nidani, District Jind Haryana. This prestigious competition carries the prizes for urban and Rural categories. This competition will be held on 04-7-2016.

विस्तृत पृष्ठ 13 पर

’k"k i`"B &1

तथ्यों के अनुसार 175 से भी अधिक विश्व भर की भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ है। जर्मन लोगों ने इसका अध्ययन किया। आज भी दिल्ली में संस्कृत भवन का नाम एक जाने-माने जर्मन शिक्षाविद 'मै1समूलर' के नाम पर है लेकिन हमें तो फुर्सत नहीं है। छोटी छोटी बात को मुद्दा बनाकर विरोध करना एक परिवार की स्तुति तथा जगह-जगह उनके स्मारक कायम करना। दिल्ली जैसी जगह की प्राईम स्थलों पर नेहरू समाधी, 53 एकड़, इंदिरा 45 एकड़, राजीव 15 एकड0 पर और इसी जमीन की कीमत एक लाख करोड़ से उपर है। भारतीय समाज में स्मारकों के लिए बहुत महान लोग, बहुत महानतम कम हुए हैं जिनसे मानव कल्याण की प्रेरणा मिल सकती है, फिर राष्ट्रीय संसाधनों का दुरूपयोग क्यों? ब्रिटेन की राजशाही में विंडसर कैसल में एक हाल में सभी रायल दफन है। फ्रांस में पेरिस स्थित'पोंतियो' में सभी उच्चा नेता, वैज्ञानिक एक इमारत में हैं। रूस में लेनिन का पुतला हटा दिया गया था लेकिन मेरा यौद्धा इस वक्त ''भारत माता की जय'' तक सीमित है।

हिंदू समाज एक सहनशील समाज है फिर हम क्यों हम ऐसे राजनैतिक मुद्दों पर गौर करें। हमें मातृभूमि पर गर्व है, यहां का हर जवां देश की अखंडता और प्रभुसता के लिए सदा बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने को तैयार रहता है। भारतीय सीमाओं के प्रहरी हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई की सीमाओं में बंटे हुए नहीं है वे केवल भारतीय सेना के जवान हैं। भारतमाता के सच्चे सपूत हैं। स्वतंत्रता संग्राम में कोई हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई नहीं, केवल भारतीय थे और अंग्रेज को पछाड़ने में हर कोई बढ़-चढ़कर लड़ा व कुर्बानी दी।

अगर कोई भारत माता की जय नहीं कहता है तो क्या फर्क पड़ता है। इससे भारत माता की महानता कम नहीं होती। किसी व्यक्ति को पूर्ण तौर से किसी राष्ट्र को समर्पित नहीं किया जा सकता है। राष्ट्र तो 'कार्य प्रगति पर' की तरह है और राष्ट्र में रहने वाले हर व्यक्ति को इस कार्य की तुलनात्मक जांच करने व आवश्यकता पड़ने पर बदलने का अधिकार होना चाहिए। आज भी सभी धर्मों , समुदायों के लोग भारतीय होने पर गर्वित हैं। हां, यहां कि पत्रकारिता अपना उतरदायित्व निभाने में खरी नहीं उतरी है। किसी अपराधी को हीरो बना दिया जाता है। इसीलिए भारतीय राजनीति में भी अपराधियों का बोलबाला है, जिससे कोई भी राजनैतिक दल अछूता नहीं है। लोकसभा एक पावन स्थल है। लेकिन लोकसभा, राज्यसभा गुंडागर्दी के मंच बन गए हैं। अपनी स्वार्थसिद्धी हेतू सदन की मर्यादा की धजियां उड़ाई जा रही हैं। जनता के सब्र का प्याला भर चुका है। कहीं हम फ्रांस की क्रांति को न्यौता तो नहीं दे रहे हैं?

भरत के नाम से भारतवर्ष बन गया। आर्यवृत चक्रवृति था। अफगानिस्तान, रूस तथा जर्मन तक की रिश्तेदारी के कई प्रमाण हमारे रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथों में उपलब्ध हैं। हां भारत के पूर्व नाम जय का भी उल्लेख है इसी लिए भारतम शब्द का प्रयोग हुआ है। यह शब्द विष्णु पुराण में प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ 'हिमाचल से समुद्र तक के उत्तर-दक्षिण भूभाग का नाम भारत है। हमारी पूजा पद्धति में आज भी भारत देश के नाम से ही पूजा शुरू होती है। अंग्रेज ने हमें फाड़ों और राज करो की नीति अपनाई और वही कांग्रेस ने चालू रखी और शांतिप्रिय नागरिकों को भाषाई, क्षेत्रीय मसलों में उलझाए रखा। देश के टुकड़े हुए, ऐसे अनेकों उदाहरण हैं और आज भी हमारे राजनेताओं ने उसे भी वोट बैंक की राजनीति में परिवर्तित कर दिया। अब तो यही प्रमाणिक लग रहा है -''हर शाख पर उल्लू बैठा है, अंजाने गुलिस्तां क्या होगा।'' आज भी राजनीति अपनी तुष्य त्यागने को तैयार नहीं है। वे भूल रहे हैं कि पाकिस्तान ही नहीं पेशावर, काबुल, ईरान तक भारत के हिस्से थे जो समय-समय पर अलग होते रहे। कोई भी व्यक्ति रोजी-रोटी या राजनैतिक कारणों से देश के दूसरे हिस्से को पलायन करनता है तो इमारा संविधान इजाजत देता है। कश्मीरी ब्राह्मणों को वहां से निकाल दिया तो क्या वे कश्मीरी या भारतीय नहीं रहे? महाराष्ट्र के नेता को बिहारी लोगों के वहां होने पर एतराज है जबकि मुंबई भारत की आर्थिक राजधानी बनाने में सभी भारतीयों का पूर्ण योगदान रहा है अन्यथा इसकी दुर्गति भी कोलकाता जैसी हो जाती। तुष्य राजनीति ने सभी आर्थिक गतिविधियों को नष्ट कर दिया और आज वही प्रगतिशील कोलकाता एक पिछड़ा क्षेत्र बनता जा रहा है। भारत माता की जय के नारे का खोखलापन एक कवि ने इस प्रकार से बयान किया है :-

भारत माता की जय बुलवाते रहो, सर्विस टैक्स बढाते चलो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, 100% तक एफडीआई की मंजूरी देते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, इंश्योरैंस का प्रीमियम बढाते चलो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, अन्यायी रूप से पैट्रोल के दाम बढाते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, रेलवे का किराया बढाते चलो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, आईआईटी आईआईएम जैसे जगमशहुर शिक्षा संस्थानों में फीस बढाते चलो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, डालर के मुकाबले रूपये की कीमत गिराते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, टोल नाके और टोल टै1स बढाते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो,शिक्षा और आरोय सेवाओं का व्यापार बनाते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, मंहगाई, भ्रष्टाचार की कड़वी दवाईयां पिलाते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, विरोधी पार्टियों की चुनी हुई सरकार को तोड़ने हार्स ट्रैडिंग करवाते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, ललित और माल्या जैसे आर्थिक घोटालेबाजों को बचाते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, गो मांस का निर्यात बढाते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, लोकतांत्रिक मुल्यों की रोज हत्या करते रहो।

भारत माता की जय बुलवाते रहो, सता के मोह में अलगाववादियों का समर्थन करने वाली पीडीपी से गठबंधन करते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, शरीफ के साथ दावत करते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, पाकिस्तानी आतंकवाद की जांच आईएसआई से कराते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, भ्रष्ट एवं दागी मंत्रियों को बचाते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, कामगार, काश्तकार और किसानों की हत्या कर, बेईमान,
मुनाफाखोर, पूंजीपतियों और उद्योगपतियों को लाभ देते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, फर्जी डिग्री वालों को मंत्री बनाकर देश की आने वाली पीढ़ी को बर्बाद करते रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो, व्यापम घोटाले में 50 से ज्यादा हिंदूओं की मौत पर चुप्पी साधे रहो।
भारत माता की जय बुलवाते रहो,जनता एवं किसानों का पानी छीनकर उद्योगपतियों को देते रहो।
जागो, भारत जागो और जोर से बोलो 'भारत माता की जय'

बहुत सोच विचार के बाद हमने अपना संविधान बनाया था। यह संविधान हमें ऐसा भारतीय बनाता है जो पंथ निरपेक्ष है जो व्यक्ति की समानता में विश्वास करता है और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, पर दूसरों के अधिकारों का भी सम्मान करता है। संविधान के आमुख में हमने भारत को ऐसे राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत किया है जो समता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुता के चार मजबूत संतभों पर खड़ा है। इन्ही आधारों ने विभाजन की त्रासदी और धर्म के नाम पर हुए भंयकर खून-खराबे के बावजूद हमें जनतांत्रिक पंथ निरपेक्ष, राष्ट्रवाद को परिभाषित करने वाला संविधान दिया, अपने इस राष्ट्रवाद के प्रति हमारे भीतर गर्व की भावना होनी चाहिए। 'भारत माता की जय' का नारा गर्व से लगाने का यही अर्थ है कि हम उन सभी के लिए गर्व का अनुभव करें जिनके कारण हम अपने आपको एक महान देश मानते हैं।

आज राष्ट्रवाद व राष्ट्रभक्ति के नाम पर हो रहे कृत्यों से राष्ट्र में धार्मिक अंधविश्वास का वातावरण उत्पन्न हो रहा है जो कि राष्ट्रहित नहीं है और देश के प्रबुद्ध नागरिकों का ऐसी राजनीति से सजग होना आवश्यक है, इससे भारतीय समाज के ताने बाने को गंभीर खतरा है। इस समय राष्ट्र में कम से कम 3 मान्यता प्राप्त राजनैतिक दल धर्म के नाम पर कार्यरत हैं और कई अन्य दल - अखिल भारतीय हिंदू महासभा, इंडियन युनियन मुस्लिम लीग, भारतीय क्रिश्चन पार्टी आदि भी चुनाव आयोग में पंजीकृत हैं। धार्मिक नामों पर चल रहे दलों के नाम व पंजीकरण प्रमाण पत्र बदलने हेतू प्रसिद्ध लेखक श्री पी0आर0राव 1980 के दशक में वकीलों व कानून विशेषज्ञों के साथ पूर्व मु2य चुनाव आयुक्त श्री आर0के0त्रिवेदी से मिल चुके हैं लेकिन धर्म के नाम पर की जा रही राजनीति ज्यों की त्यों जारी है।

धर्म को राजनीति से जोड़ने के संदर्भ में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के 9 न्यायधीशों की पीठ ने एस0आर0 बोमाई केस में धर्म निरपेक्षवाद को भारतीय संविधान का मूलभूत आधार बताकर इसकी जटिलताओं का वर्णन किया था कि धर्म एक व्यक्तिगत विश्वास का विषय है। राज्य किसी विशेष धर्म का न तो पक्षधर है और ना ही उसके खिलाफ है। राज्य को कानून के मुताबिक हर धर्म को समान सुरक्षा प्रदान करनी होती है। हमारे संविधान के प्रावधानों के अनुसार कोई भी राजनैतिक दल या संगठन एक ही समय में राजनैतिक व धार्मिक दल नहीं हो सकता और संविधान किसी भी सूरत में धर्म व राज्यसता के मिलाने की स्वीकृति नहीं देता है।

सभी से करबद्ध निवेदन है कि औच्छी राजनीति का त्याग करें, ऐसे राजनीतिकारों का वहिष्कार करें ताकि भारत पुनः सोने की चिड़िया कहलाए और तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वज्ञान गुरू का दर्जा पुनः स्थापित हो सके। राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रप्रेम आज विचारणीय विषय है। भक्ति एक व्यापार बन गया है। फ्लां देवी-देवता की भक्ति करो, आमूक फ ल मिलेगा और हम मंदिर, मस्जिद गुरूद्वारे या गिरिजाघर में सौदा करने जाते हैं कि मुझे यह आमूक वरदान दे दो, मैं इतना चढ़ावा दूंगा। यहां भी स्कूल, कालेज, लाईब्रेरी या पानी का स्त्रोत बनाने का नहीं, भूखे को रोटी देने का नहीं, एक हाल बनवाने या पाठ करवाने की बात होती है जिस पर कोई अमल नहीं करता। एक ताजे ग्लोबल सर्वेक्षण के अनुसार आज भारत में प्रति व्यक्ति जी डी पी पाकिस्तान, सोमालिया ही नहीं यहां तक कि पैलीस्तीन के प्रादेशिक क्षेत्रों से भी नीचे यानि कि 157 देशों में 118वें स्थान पर है जो कि हमारी राष्ट्रीयता - गैर राष्ट्रीयता जैसी संकुचित वाद-विवाद का परिणाम है इसलिए आज राष्ट्रवाद के साथ-साथ हर भारतीय को आर्थिक समानता पर लाने का प्रयास होना चाहिए।

आज राष्ट्रवाद को समझने की जरूरत है। राष्ट्रवाद के पक्ष और विपक्ष में दुनियाभर में बहस चली है, हमारे देश में आजादी की लड़ाई के दौरान भी महात्मा गांधी व गुरूदेव रवींद्रनाथ ठाकुर के बीच इस विषय पर लंबी बातचीत हुई थी। मानवता के समर्थन के बावजूद गांधी जी से यह मानते थे कि राष्ट्रवाद में उद्धारक की संभावनाएं निहित हैं जबकि विश्वकवि का कहना था राष्ट्रवाद की आक्रामक संभावनाओं के खतरे कहीं ज्यादा हैं लेकिन स्वतंत्र भारत में जिस तरह से राष्ट्रवाद को समझने, समझाने की कोशिशें हो रही हैं वह तरीका भारतीय समाज को बांटने के खतरों से भरा है। इसलिए आज हिंदूत्व की संकीर्ण विचारधारा का त्याग कर समस्त राष्ट्र को राष्ट्रभावना के सुत्र में बांधने की आवश्यकता है।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस.;सेवा निवृत,
प्रधन जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

Grave Water Crisis Facing Haryana State

Ram Niwas Malik

Haryana is destined to face grave crisis of water availability both for irrigation and drinking purposes in near future because of the following reasons:

1. Ground water level in the tube-well belt is going down year by year due to excessive pumping over the years. Some of the blocks have been declared dark zones by the Central Ground Water Board and tube well drilling has been completely banned in these blocks. In remaining blocks cheap and simple cavity bores have been replaced with deep tube wells. Cost of installing a cavity tube-well is Rs. 30000/- while that of a deep tube well is Rs. 3-5 lacs. Still farmers are going ahead with highly water intensive paddy crop because it fetches them Rs. 0.5-1.0 lac per acre. Now many villages falling in the tube-well belt have started clamouring for canal water for irrigation or their lands as even deep bores have become non-functional.The matter of great concern is that the area of tube well belt is shrinking fast.

2. Sizes of various townships in Haryana are growing exponentially because of migration of rural population towards urban areas. Also labour class from Bihar, Bengal and Bangladesh is coming to Haryana towns in a big way. Urban water supply is designed at the rate of 150 litres per person per day. Previously water supply system of all the towns in the tube well belt was based on underground water withdrawal. Now these tube wells are unable to maintain their yield both in terms of quality and quantity to cope with the demand and water supply schemes of many big towns like Ambala or Gurgaon had to be based on canal water. Cumulatively, these towns raise a heavy demand on canal water which otherwise was put to use for the irrigation of crops. Therefore the state has reached a situation where there is big competition or trade-off in the use of water for irrigation and urban water supply schemes. For example the Govt. of Haryana laid two special channels with a capacity of 700 cusecs to provide water supply to Gurgaon township. Presently the usage of canal water is 250 cusecs but it will ultimately reach 700 cusecs once all the 110 sectors are fully inhabited. If water supply resources are not augmented simultaneously, there are going to be big fights between the farming community and the urbanites over the sharring of canal water.

This year, the discharge at Tajewala head-works on 24/4/2016 was 1648 cusecs. 761 cusecs is given to Delhi under the orders of Supreme Court leaving behind 887 cusecs for both UP and Haryana. Haryana gets 2/3rd share and the flow released in WJC was only 588 cusecs. This meagre flow resulted in closure of all the Hydel projects along WJC. Now it becomes very difficult for irrigation department to apportion 588 cusecs between farming community and the city dwellers. The situation in many districts like Bhiwani, Narnaul, Mewat is akin to the situation in Marathwada. The farmers get their canal water supplies once in 42 days in Rohtak and part of Sonipat districts.

3. Haryana Government built the Hansi-Butana link about 8 years ago to divert surplus water from Bhakhra branch to districts of south Haryana. But Punjab and Rajasthan Governments filed writ petitions in the Supreme Court against this diversion on very flimsy grounds. The writ is still pending in the Supreme Court for final adjudication. This is a fit case of judicial in activism.

4. Haryana was allotted 3.5 MAF of canal water from the three rivers of Punjab at the time of bifurcation in November 1966. Satluj-Yamuna link (SYL) was proposed to carry Haryana's share. 75% canal was built long back. But balance 25% length has remained unexecuted due to hurdles created by Punjab Government inspite of the directives of the Supreme Court. Finally Punjab Govt. passed an Act in 2004 to abrogate the agreement between Punjab and Haryana Governments over sharing of water. The Central Government under Dr. Manmohan Singh (instead of rebuking the Punjab Chief Minister Capt. Amrinder Singh), requested the President to seek the opinion of the Supreme Court under Article 143 of the Indian Constitution to ascertain if the unilateral decision of the Punjab Government was legally valid or not. The Supreme Court constituted the bench to hear this case in March 2016 after a period of twelve years. This is another fit case of judicial in activism. Now the Supreme Court has stated that it would be expressing its opinion to the President of India and it would not be binding on the states.

The BJP Govt in Haryana had declared at the time of elections in October 2014 that it would

settle all the water issues with Punjab Government amicably through discussions. But nothing was done during the last 18 months. The issue could have been resolved had the Chief Minister requested the Prime Minister to call a collective meeting of Congress, BJP and SAD leaders. The dispute with Punjab is now over 1.8 MAF of canal water and Haryana Chief Minister could suggest "Let Punjab give 0.75 MAF during 5 critical months till Kesao, Lakhwar and Renuka dams are constructed across river Yamuna and its two tributaries namely Tons and Giri."

5. The successive Chief Ministers of Haryana made absolutely no effort to harness river Yamuna. Yamuna is a big perennial river with total annual flow of 11 MAF. Its discharge during flood season rises up to 6.0 lac cusecs and floods the areas up to Delhi. But for the remaining 9 months average discharge available to Haryana is 2500 cusecs. This meagre flow is unable to cope with the irrigation and water supply demands of the state. Presently the water is released into the branch canals after a period of 42 days based on the system of rotation. Now you can imagine the plight of farmers in canal irrigated areas.

Proposals were made to harness the run-off of river Yamuna in 1947. 866 feet high Keshao dam was to be constructed across river Tons- a tributary of Yamuna 450 feet high Renuka dam was proposed across river Giri- also a tributary of Yamuna. 600 feet high Lakhwar dam was proposed across river Yamuna. All the three rivers merge and become one river channel near Ponta Sahib township.

Delhi Government made an agreement with Himachal Govt to construct Renuka dam in 2005 to get an assured water supply of 760 cusecs round the year. But the project could not be launched as Forest Clearance by Government of India has not been granted so far. The other two projects are still on the paper.

Sh. M.L. Khattar the present Chief Minister Haryana has initiated efforts to build Lakhwar Dam. Sh. Nitin Gadkari, Minister for Surface Transport, Government of India is also showing keen interest in this project in order to increase the dry weather flow in river Yamuna for the purpose of navigation. But the existing Lakhwar Dam project will not be able to serve the dual purpose (irrigation and navigation) as it has been designed as run-off-the-river project only. It can meet the desired objectives only if it is re-designed as a storage dam and its height is raised 750 feet against the proposed height of 600 feet.

6. All the 80 towns of Haryana generate about 800 cusecs of sewage/waste water. This untreated water is discharged mostly in drains and hardly 20% used for irrigation. 800 cusecs is a significant flow and should not be allowed to go waste in the drains. Both Irrigation and Public Health Departments should be directed to prepare schemes to use every drop of waste water for irrigation.

In order to tide over the impending crisis, the state needs to initiate a slew of short and long term measures which are suggested briefly as below.

Short Term Measures:-

1. There should be compulsory implementation of water harvesting measures in all the towns to inject the entire rain water run-off into the ground. This step will go a long way in improving the ground water regime.
2. Every drop of sewage flow/waste water should be used for agriculture after resorting to due process of its treatment.
3. Significant amount of seepage water is available along the banks of main canals. Cavity tube-wells be installed at out-let points to draw the seepage water and use it for irrigation and drinking purposes. This responsibility should be given to village Panchayats. There are many examples where villagers are drawing this water for water supply purpose and distributing to the villagers after charging necessary fees. Some farmers have laid their own private pipelines to irrigate their lands with the system when the canal is running dry.
4. Waste water in village ponds should be pumped out before 30th June every year and used for irrigation. This will enable the ponds to receive fresh rain-fall-run-off during the incoming monsoon season and avoid flooding conditions.
5. A special writ petition be filed in the Supreme Court to allow the state to divert the water from Bhakra Branch to Hansi-Butana link canal.

Long Term Measures:-

1. The problem of shortage of water for irrigation and drinking purposes will be solved permanently only when the three dams i.e. Kesao, Lakhwar and Renuka are constructed across rivers Tons, Yamuna and Giri respectively. This will be possible only if the Chief Minister of Haryana is able to prevail upon the Prime Minister to keep these projects on the fast track and all clearances are put in place at the earliest. Construction of these projects will take

8 years if everything goes right. This will be further possible if people of Haryana at large understand this issue and exert lot of social pressure on the Haryana Government to initiate these projects as early as possible. Once these projects are complete Haryana will not need water from SYL.

2. The Chief Minister Haryana should also prevail upon the Hon'ble Prime Minister to hold a meeting consisting of leaders of all the parties both from Punjab and Haryana including (Mrs. Sonia Gandhi) and hammer out a pragmatic solution with consensus for sharing the river water of Punjab. Punjab Government should be requested to allow 0.75 MAF of water to Haryana through SYL canal (against its share of 1.8 MAF) till the three dams are constructed and commissioned.

Conclusion:-

Haryana Government is going to face major water crisis in the coming years during the dry months for the reasons explained already. It is therefore suggested that the Government should take the necessary steps as suggested above to avoid this unpleasant situation. Somebody had rightly said that the future wars will be fought on the issue of distribution of scarce resources of water and Haryana is going to face this situation very soon.

Violence during Jats' OBC Quota Stir: Whether Planned or Retaliatory? Sequence of Incidents at Hansi, Bhiwani, Sanjarwas and Rohtak

Dr S S Sangwan, Professor SBI Chair,

The Jat-quota stir in February 2016 is alleged iniquitous due to violent incidents during the agitation. The pertinent question is "whether the violence was planned or it erupted in retaliation to confrontation with other Castes and police during the agitation?" Suppression of agitation by administration is a normal process and it is ephemeral but opposition by the side by side living people is taken as a threat and its repercussions are likely to be violent and long-lasting. The reservation in India has become like an inheritance for some castes due to its continuation over a long time. This is manifested in the opposition by Meenas of the Gujjars' demand for inclusion in Scheduled Tribe quota in Rajasthan and by Sainis & Gujjars of the Jats' demand for including in other backward castes (OBCs) in Haryana. The Jats' OBC quota stir was not only opposed by the affected Sainis, Gujjars, et al but the Rajputs & Punjabis also joined, giving it a political dimension. It is said that the repulsive Speeches & Statements by an MP, Rajkumar Saini against Jats and their OBC quota demand, rallied the other castes to confront with the agitators. The ruling Bhartiya Janta Party (BJP) to which the MP belongs, failed to contain him and even higher leadership of BJP has not commented on confrontation during the stir. Opposition parties allege that it was political strategy of the ruling party to curtail the stir with support from other castes to create lasting political divide between Jats & non- Jats. A question is also raised about violence this time, though Jats had blocked road & rails in their earlier agitation too. To enquire into these allegations, the author visited and interacted with Jats and other castes people at Hansi in Hisar, Bhiwani, a village Sanjarwas in Bhiwani district and Rohtak city from 13 to 17 April 2016.

In Hansi, a village Mayyar about 10 km from the town and dominated by Jats on NH from Hisar to Delhi has been the epicenter of blockades by quota agitators since 2010. At this place, it is convenient to block the roads from Hisar to Delhi/Jind/Bhiwani due to railway track on one side and military cantonment on other side. Even railway line from Hisar to Delhi, Bhiwani, Rewari is alongside the Mayyer and hence the same agitators can block the rails too. The road was blocked on 18th February and mobilization of Jats started in the area. It was reported that on night of 19 February, the road at Sainipura in Hansi was blocked by politically motivated Sainis by felling trees to stop the agitators from Sisai a big jat dominated village, from going to Mayyer. The agitators diverted through a Jaggabara village, dominated by Gujjars who also confronted with the agitators, damaged their vehicles and forced them to retreat. This incident of confrontation spread like forest fire in the surrounding villages and hamlets (dhanis) like Sainipura, Dhanipal, Lalpura, Sisai, Masudpur, Data Depal inhabited by Sainis, Gujjars and Jats,. Within a short time, the Jats from Sisai, Masudpur and Data villages came in support and

there was a incensed clash among Jats and Gujjars & Sainis, resulting in injury to many persons with gunshots to namely Budhram Gujjar and one Ramniwas from the family of Attar Singh Saini, a former MLA & strongman of the area. After that some establishments of Jats like Sehnai Palace were damaged. On the same day at 1.30 P.M, Jat Dharamsala(inn) at Hansi was attacked by a mob of 200 persons from the side-lane coming from Sainipura side as reported by Balwant Singh, advocate of village Depal, Randhir Singh Dalal of Masudpur and Vinod Kumar of Garhi. This group also called as OBC brigade had first looted a wine shop and then threw stones & bricks in the compound of the inn, breaking its glasses on the lane-side. At that time, there were only one caretaker and 2-3 other persons in the inn but in view of threat, Jats had already alerted the police which arrived in time along with military from the Hisar-Delhi NH side. The forces dragged the crowd back and saved the inn from stern damage.

In retaliation to incident at Jaggabara & the inn, Jat agitators entered Hansi from Mayyar side at 5 PM on 21 February when the patrolling forces went to other side of the town. The youth with make-shift sticks/rods in their hands as visible in a video, broke upon a restaurant, known as Bhaiji Ka Dhaba located at the entrance to Hansi town. The crowd looted the eatables/sweets and damaged the furniture, refrigerators and other items of the dhaba. Thereafter, they looted and burnt two showrooms of shoes & MRF-tyres owned by Bhaiji family and an agency of tractor & Hero Honda two wheelers owned by one Ravinder Saini. All these establishments are within 50 yards and this incident continued for about 30 minutes. Prima facie, this location appears convenient to the mob as it was on one end of town and they went away quickly after looting. No other major incident of arson was reported in Hansi town.

Thereafter, in the night of 21st February, the violence spread to Dhanis and Deras in the villages around Hansi. Deras are small hamlets families at tubewells in their field. So in the night separate groups of Sainis/Gujjars and Jats attacked and looted the deras and dhanis of each other. However, secret information by good people from both the Jats and non- Jats were sent in advance and hence loss of lives was checked. The author also interacted with the residents in Sainipura in Hansi viz., Subhash Saini, advocate, Jagdish Chander, an animal feed seller and Balbir Singh, a tempo driver. As per their version especially Mr. Balbir Singh, "We were fed up with Jats who were always dominating". He was also critical of the role played by Government which allowed Raj Kumar Saini to instigate people, though, he shall still vote for government. He told that even after two months, there is a tension between Jats & non-Jats. Loss of trust among each other is creating problem in day-to-day activities. In court, the cases of Jats are being taken over from Saini by Jats advocates and vice versa. Jats are not coming to shops of sainis. Hence, it is affecting the competitiveness of business and services in the market.

The sequence of incident at Hansi amply proves violence and looting erupted due to confrontations of non-Jats especially Sainis and Gujjars with the agitators. It is to be noted that the loaded trucks on the NH were not looted and hence people attributed the Hansi looting incident as a retaliatory action. In the Hisar city, some tension at one place was controlled swiftly by the District Administration. Jats and all other castes were appreciating the role of Deputy Commissioner of Hisar.

At Bhiwani, the author interacted with Dinesh Kumar, Manager of the affected Jat Dharamshala and its cashier Dilbagh Singh & Executive Member Hemant Titani. Mr. Dinesh Kumar reported that on 19th February, a meeting by non-Jat castes led by Ex-Mayor Bhawani Pratap Singh took place in Nehru Park at 12.00 p.m. After planning in the meeting, the group first went to Hansi road near ITI / Government College to remove the road blockade by Jat-students. At that place, there was confrontation between the two groups with bamboos available from adjoining shops. After show of strength, the OBC group was compelled to go back and the blockade continued. This OBC brigade again re-assembled in Rajput Dharamshala at Rohtak road. After the meeting, the group went to the Devi Lal Sadan where stones were pelted. Thereafter, a petrol pump owned by a family member of former Chief Minister Om Prakash Chautala was also damaged. Thereafter, the group proceeded towards the Jat dharamshala. It was reported that a jeep came in advance and the surveyed the situation before attacking. Then the group of around 150 persons reached the dharamshala at 6.45 p.m. These people started climbing on main gate and the chowkidar told them to come through smaller gate, if there is some work. But the mob was in a violent mode and someone hit the elderly chowkidar with an iron rod. The main gate was forcefully opened with iron rods and the mob entered into the inn and damaged furniture while group leaders were standing outside. The crowd set the gate on fire but not fire inside the inn and damage was checked. This area has only a few Jat families but neighbouring residents started taking photos of the incident and the riot mob left on its own.

This news of dharamshala burning spread to the adjoining villages and thousands persons of Dhanana village about 15 km from Bhiwani volunteered to come in the city. However, the SP of Bhiwani, reportedly persuaded them not to come to the city to create a bigger confrontation between Jats and non-Jats led by the Rajputs. The persuasion efforts of the SP saved the city of Bhiwani from any further violence.

The next incident visited was at Sanjarwas and Phogat villages on both sides of Charkhi Dadri – Rohtak Road. It was reported that the smaller Phogat village of Jats blocked the road and Rajputs of Sanjarwas led by a Sarpanch, Satyender Singh Panwar came to forcefully remove the blockade. Reportedly, Mr. Panwar is related to a Central Minister and in order to show his clout; he mobilized Rajputs for forcefully removing the blockade. The Jats of Phogat village sent messages for support to the neighboring Jat-village of Ranila whereas Mr. Panwar mobilized Rajputs from adjoining villages of Bond, Bass and Sanwar. The charged mobs in thousands were standing on both sides of a canal between Ranila and Sanjarwas to confront with each other. But one Samaritan Mr. Madhan Singh Sarpanch of Sanwar, a Rajput village took a bold step and prevailed upon Rajputs not to meddle with the agitating Jats who are peacefully making their demand to the Government. Many elders from both the Rajputs and the Jats were convinced and supported him. As a result the dangerous caste war among side by side living castes was avoided and the mobs dispersed and the Jats peacefully continued their blockade.

At Rohtak City, the epicenter of agitation & violence, the author interacted with a few shopkeepers and a few onlookers of agitation. Mr. Lekhraj a panshopwala and Dharambir Juneja told that mobs of the villagers looted and burnt the shops and showrooms of branded shoes and clothes. The looting and burning was mainly on the road near the D-Park, Medical MOR (round about) and powerhouse. It was observed that the shops in by-lanes and even arc of D-park were spared which may be due to fear of counter attack on agitators in by-lanes. Even, a big Sheetal Mall in front of D-Park was also spared. It was reported that the mall belong to a relative of Ex-Chief Minister of Haryana while a few others said that private armed guards protected the building. In this area, most of the shops were looted and burnt which belonged to Punjabi community who are the main occupants too. To know the reasons for this violence; the sequence of events from 17th to 22nd of February, 2016 in Rohtak was ascertained from an active participant who narrated as under.

The agitation for OBC quota by Jats started peacefully in Rohtak on 17th February, 2016 with blocking of road in front of gate no.1 of Maharishi Dayanand University (MDU), Jat College and the Powerhouse. On the other hand, in the city, one delegation of advocates reportedly went to Deputy Commissioner's Office to give memorandum on JNU issue while another group of non-Jats advocates has approached the DC to get the Jat-blockades removed in the city. The OBC group mistook another group as supporters of the agitation. There were arguments and a clash with polarization between Jat and non-Jats advocates. It was tackled by administration but in the mean time, a rumor of damage to Chhotu Ram statue spread there and then Jats reached at Chhotu Ram Chouk where OBC brigade confronted with them and burnt four motor cycles of agitators. Some persons of both sides were injured in the incident. Thereafter, the agitators were returning towards the university but in between at Ashoka Chowk, the OBC Brigade supporters, mainly traders, confronted with agitators and burnt their two more bikes.

In the evening of 18th February, the police removed the blockade at power house and Jat College but there was altercation between the students and police in front of MDU gate and the blockade continued there. In revenge, the police raided the hostels in MDU and Jat college at around 9 P.M, the dinner time. It is reported in news papers that Jat-students were targeted and brutally beaten up by the police lead by two DSPs. The beating of Jat-students was circulated live on whatsApp and SMSs were sent to relatives and villagers for support.

Next day, on 19th February, thousands of villagers turned up at Powerhouse/MDU in their tractors/other vehicles. One DSP and his constables were cornered by crowd in an Agro Mall in front of the University. Many policemen changed their dresses and mixed with the public. It was reported that the DSP was made to take off his uniform but let off after begging apology from the agitators. While the other DSP took his force towards PGI and reached to IGP Office via back side of MDU.

After taking permission from the IGP; police and BSF people took position in the circuit house near the round-about on Rohtak–Delhi NH. Paramilitary forces had reached Rohtak by helicopters as roads were blocked after Bahadurgarh. The agitators also divided themselves into two teams. One team (A) continued blockade at MDU while the other team (B) went to stop the forces from reaching the blockade site. When the agitators of B-team came near the circuit house, shouting slogans, someone threw a stone hitting a BSF constable. In response, firing was

started immediately without lathi-charge. About 10 persons were reportedly killed, 5 vehicles were burnt and it ignited fire of revenge among the agitators. Agitators went to IGP office at about 500 yards, threw stones and burnt its gate. The IGP escaped from the back gate of his office-cum residence and was not traceable for 2 days. On being told that firing orders were from State Government; the mob moved toward city and on the way burnt the house of Finance Minister Haryana in sector 14.

In mean time, news of killing of one person (Ravinder Nandal) at Partap Chowk by the OBC Brigade of Sainis & other castes reached to the agitators. His body was left on the road, though rumor spread that he had been tied to a poll. It was taken as threat by Jats. Thereafter, the agitation was joined by pehlwans/musclemen of nearby akhadas who came to city with blunt weapons. On 21th February, two Jat-youth, who entered in Merian Skytech Mall in Sector-3 were harshly beaten up by the guards. In retaliation, a mob of thousands agitators went to the mall which was looted and burnt. Such incidents of confrontation, looting and burning continued for two days. In the mean time, the Military and CRPF had reached Rohtak in large numbers and brought situation under control without shooting. On the night of 22nd February, the OBC brigade had reportedly planned an attack in Jat-houses of HUDA sector-1. The residents of the sector were alerted who were ready to face with stones on their roofs. However, an old Saini person warned the OBC Brigade not to attack the Jat houses and avoid the likely strong retaliation. His warning gave right message to OBC brigade and the happenings like Hansi's dhanis were avoided.

Conclusions

The discussion above and other newspaper reports indicate that Jats have resorted to blocking of roads and rail network as per their plan and it spread in 11 districts by 19 February 2016. But the above sequence of violent incidents at Hansi, Bhiwani, Sanjarwas and Rohtak reveal that the violence, burning and looting had erupted after confrontation of the non-Jat groups/ the OBC brigade with the agitating Jats. In fact, the confrontation between the Jats and non-Jats would have been controlled without violence, if the Government had strictly warned non-Jats against meddling with the agitators and had announced that it is the duty of administration to control the agitators and deal with their demands. If police beats a person, he will not mind but if a neighbor beats/ opposes him, he will retaliate with all his might. In Hansi, even the Sainis were not appreciating the provoking statement by the M.P., Rajkumar Saini. The sequence of the events amply indicates that the strategy of suppressing Jat-agitation through bullying from non-Jats instead of controlling through administration flared up the violence. It has created a lasting divide in the State's social fabric. If one Sarpanch of Sanwar village can pacify the charged mob of about 15000, then State Government would have easily contained the opposition by other castes and avoided the retaliatory violent incidents during agitation. These confrontations among castes have disrupted the social harmony in the State which may take long time to heal. The violent incident have also created fear in the market and people especially from outside may be hesitant to invest in Haryana. It is also heard that different castes may boycott purchase from the shops of opposing castes and it will impact the competition in the market. Even normal economic activities at lower level may give rise to skirmish due to the tension created during agitation.

शुक्र है एक किसान हूँ

& eunhi flg

नेता नहीं, एक्टर नहीं, रिश्वत खोर नहीं,
शुक्र है एक किसान हूँ कुछ और नहीं...

मैं अपने खेत पर रहता हूँ पर न गरीब हूँ,
न मैं किसी पार्टी के करीब हूँ...

किसी रोहित बेमुला के मर्डर पर मैं लड़ता नहीं,
कभी राष्ट्रीयता की बहस में मैं पड़ता नहीं..

मैं जन धन का लूटेरा या टैक्स चोर नहीं ,
शुक्र है एक किसान हूँ कुछ और नहीं...

न मेरे पास मंच पर चिल्लाने का वक्त है,
न मेरा कोई दोस्त अफज़ल याकूब का भक्त है ...

न मुझे देश में देश से आज़ादी का अरमान है,
न मुझे 2–4 पोथे पढ़ लेने का गुमान है...

मेरी मौत पर गन्दी राजनीति नहीं, कोई शोर नहीं,
शुक्र है एक किसान हूँ कुछ और नहीं...

मेरे पास मैडल नहीं वापस लौटानें को,
नक़ली आँसू भी नहीं बेवजह बहाने को...

न झूठे वादे हैं, न वादा खिलाफी है,
कुछ देर चैन से सो लू इतना ही काफी है...

बेशक खामोश हूँ मगर कमज़ोर नहीं,
शुक्र करो कि एक किसान हूँ कुछ और नहीं..

Peasantry Transformed Gandhiji as Babu

Suraj Bhan Dahiya

Bal Gangadhar Tilak was born a year before the uprising of 1857; he seemed to have carried in him the blood of a revolutionary of the uprising. That should probably explain his rugged character of a dogged fighter--- bold, courageous, unbending. He was the first militant voice of a rebel to have expressed the anguish of the Indian soul after 1857 Uprising.

Tilak blazed a new trail when he took fearlessly and relentlessly the case of the suffering peasantry in the famine of 1896 in konkan an in Maharashtra. Ratnagiri - born Tilak was amidst his own people who understood his idiom and who came to workshop him as a demigod.

His speeches had the roar of a lion his eyes flashed fire of indignation, his tongue poured ridiculously. Its biting bluntness' roused the peasants anger and stirred them into action.

In one such speech Tilak told them: "When the Queen (Victoria) desires that none should die, when the governor declares that all should live and when the Secretary of State is prepared to incur debt of necessary, will you kill your self by timidity and starvation? If you have money to pay land revenue, pay them by all means. But if you have not, will you sell your things away only to avoid the supposed wrath of subordinate government officials? Can you not be bold even in the face of death? we can stand any number of famines. But shall we do with sheepish people? Had such a famine broken out in England and had the Prime Minister been as apathetic as our Viceroy, His government would have tumbled down in no time" Ultimately the government bowed before Tilak and implemented Famine relief code.

Ch. Chhotu Ram repeated the same in the same tone in 'Bechara Zamindar' "Oh peasant! if you want to survive and in place of a wretched life anonymity you want a higher status, then learn the new techniques of struggle. Give up silence. Discard dumbness. Adopt the strategies of crying horse, emitting shrieks, wailing and cursing. See if there is any impact created by your demands. Long before you have tested the efficacy of silence, which is in no way helpful but rather harmful. For ages together you have been treading the path of dumbness but it has not taken you to the point of destination. The truth rather is that you have followed a wrong path all along. Now retrace your steps and change the direction. Have a recourse to acrimony and protests to prayers. Adopt the path of loud roar of lion and see how rapidly your perceiving the top of the temple. Realize your latent strength, exploit it: world belongs to you, my brethren! "

Tilak also advocated Swadeshi doctorine (of Khap): "we shall not give them assistance to collect revenge and keep peace. We shall not assist them in fighting beyond frontiers or out side India North Indian blood and money. We shall not assist them in carrying on the administration of Justice. We shall have our own courts and when times come we shall not pay taxes". He asked the people "Can you do that by your united efforts ?" and he arrowred ; "If you can, you are free from tomorrow". Such enchanting made Tilak. 'Lokamanya and such lion - hearted leadership took Tilak to new hights of popularity untouched by anyone till then. He enjoyed the people's look and admiration; no less there obedience.

Tilak was Gandhi's precursor, even his path finder. Gandhiji returned to India from South Africa in 1915. He tried his non-violence practice in May 1917 at Champaran in Bihar where thousands of Indigo cultivators suffered at the hands of British planters. At Gandhiji's call, thousands rose to a man and the government responded by agreeing to Gandhij's terms. Again Gandhiji planned an agrarian revolution through his non-violent stayagrahas in Kheda in 1918. It was a challenge to the government over land-revenue - the very foundation of the Indian Empire. The government's concern was voiced by Commissionor F.G. Pratt; 'In India, to defy the law of land revenue is to take a step which would destory all administration. To break this law, therefore, is different from breaking all other laws. If you fight about land revenue today, the whole country will fight about it.

The issue moved was simple. But it was blown up by the officials for the sake of their prestige. Excessive rains had destroyed the kharif crop, while an epidemic of rats had ruined the rabi crop. Gandhiji demanded a postponement not remission of assessment if yield was estimated to be less than 25% and a complete remission in the event of a failure of crop in the following year. Gandhiji and his associates were dubbed an agitators. He was not spoiling for a fight, but to reach an amicable

settlement. The government continued to be obdurate.

Gandhiji launched the Satyagraha on March 22, 1918 at a public meeting of peasants at Nadiad with such inspiring words: "It is intolerable that government should forcibly recover assessment. However, truthful the people are and however just there case is the government refuses to believe them and insists on having its own way. There must be Justice and injustice must be ended. It is an insult to all of us, the government dares to make this accusation, I would therefore, tell you that if the government does not accept our request, we should not pay land revenue, and we would be prepared to face the consequences".

The Satyagraha which was launched on March 22, continued through April, May and part of June. Not only did Kheda attract all - India attention but sympathy as well. The Bombay Chronicle wrote that it promises to be memorable in the history of this country'. The unity amongst the peasants and their well wishers undergoing sacrifices made government climb down to terms Gandhiji had suggested. Termination of the satyagraha was announced on 6th June, 1918 incarning Gandhiji as 'Bapu.' Later in 1928, the peasantry at Bardoli decorated Vallabhbhai Patel with the honour of 'Sardar' and Ch. Chhotu Ram was given the unique title of 'Rehabar-i-Azam' at Lyallpur in 1944.

So Tilak was a powerful factor in the creation of an all India peasantry strength, through which emerged great souls like Mahatma Gandhi, Sardar - Patel and Deenbadhu - Chhotu Ram.

युवाओं में बढ़ता मानसिक तनाव

– हिन्दुस्तान योद्धा

मानव जीवन की भूमिका बचपन है तो वृद्धावस्था उपसंहार है। युवावस्था जीवन की सर्वाधिक मादक व ऊर्जावान अवस्था होती है। इस अवस्था में किसी किशोर या किशोरी को उचित अनुचित का भलीभांति ज्ञान नहीं हो पाता है और शनैः शनैः यह मानसिक तनाव का कारण बनता है। मानसिक तनाव का अर्थ है मन संबंधी द्वन्द्व की स्थिति। आज का किशोर, युवावस्था में कदम रखते ही तनाव से घिर जाता है। आंखों में सुनहरे सपने होते हैं, लेकिन जमाने की ठोकर उन सपनों को साकार होने से पूर्व ही तोड़ देती है। युवा बनना कुछ चाहते हैं पर कुछ पर विवश हो जाते हैं। यहीं से मानसिक तनाव की शुरूआत होती है।

युवा उच्च शिखा प्राप्त करके डॉक्टर, इंजीनियर बनकर धनोपार्जन कर सुख–सुविधा युक्त जीवन निर्वाह करना चाहते हैं, परन्तु जब उनका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता तो उनका मन असंतुष्ट हो उठता है और मानसिक संतुलन गड़वड़ा जाता है। शिक्षा से प्राप्त उपलब्धियां उन्हें निर्थक प्रतीत होती है।

वर्तमान युग में लड़का या लड़की, सभी स्वालंबी होना चाहते हैं, मगर बेरोजगारी की समस्या हर वर्ग के लिए अभिशाप सा बन चुकी है। मध्यम वर्ग के लिए तो यह स्थिमि अत्यंत कष्टदायी होती है। जब इस प्रकार की स्थिति हो जाती है तो जीवन में आए तनाव से मुक्ति पाने के लिए वे आत्महत्या जैसे कदम उठाने को बाध्य हो जाते है महिलाओं की स्थिति तो पुरूषों की तुलना में ज्यादा ही खतरनाक है।

वर्ष 2012 की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की तकरीबन 57 फीसदी महिलाएं मानसिक विकारों की शिकार बनीं। विश्व स्वास्थय संगठन के एक आंकड़े पर गौर करें तो हम पाते हैं कि हर पांच में एक महिला और हर 12 में एक पुरूष मानसिक व्याधि ा का शिकार है। देश में लगभग 50 प्रतिशत लोग किसी न किसी गंभीर मानसिक विकार से जुझ रहे हैं। सामान्य मानसिक विकार के मामले में तो आंकड़ा और भी भयावह है। इनमें महिलाओं के आंकड़े सबसे अधिक हैं।

'जिंदगी जब मायूस होती है तभी महसूस होती है' फिल्म 'डर्टी पिक्चर' का यह संवाद उस नायिका की व्यथा है जो पहले परदे पर चमकने के सपने लिए ग्लैमर की दुनिया में आती है और हर तरह के समझौते करते हुए अपने का स्थापित भी कर लेती है। पर चकाचौंध ा भरी इस दुनिया में शोषित होते हुए शिखर पर पहुंचने के बाद अंततः इतनी अकेली हो जाती है कि आत्महत्या कर लेती हैं।

बहरहाल, दीपिका का यह खुलासा एक बार फिर सोचने को मजबूर करता है कि सिने जगत के कई चेहरों के असल जीवन में अंधेरा क्यों होता है? उनके यहां क्यों संबंधों के अर्थपूर्ण भाव जिन्हें हम आस्था, समर्पण और विश्वास कहते हैं, निर्वासित रहते हैं। क्यों ग्लैमर के आसमान में उड़ने वाले अधिसंख्य सितारों की रिश्तों की पवित्रता और जीवन की चेतना ढूंढ़े नहीं मिल पाती।

हमारा पारिवारिक और सामाजिक ढांचा ही ऐसा है कि मानसिक अवसाद या तनाव को बीमारी नहीं माना जाता, जबकि अवसाद जैसी समस्या को स्वीकारना और उसका हल खोजना छुपाने वाली बात नहीं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट की मानें तो भारत अवसाद के मरीजों के मामले में दुनिया के अग्रणी देशों में से शुमार है। यहां तकरीबन 36 फीसदी लोग गंभीर अवसाद से ग्रस्त हैं।

आमतौर पर माना जाता है कि गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और असफलता जैसी समस्याओं से जुझने वाले युवा अवसाद और तनाव झेलते हैं और इसके चलते आत्महत्या जैसा कदम भी उठा लेते हैं। ऐसे में कुछ समय पहले आये एक सर्वे के परिणाम थोड़ा हैरान करने वाले हैं।

वोकेशनल कोर्सेज हैं तरक्की की राइट च्वाइस

अनामिका

वोकेशनल कोर्स में छात्रों को किसी खास क्षेत्र के ट्रेड्स के बारे में बताया जा रहा है, ताकि युवा संबंधित क्षेत्र में दक्ष हो जाएं। ये कोर्स कई तरह के क्षेत्र जैसे, हेल्थ केयर, ग्राफिक, वेब डिजाइनिंग, फूड टेक्नोलौजी, कॉस्मेटोलॉजी आदि कोर्स में ऑफर किए जाते हैं। गेम डिजाइनिंग, मोबाइल ऐप डिजाइनिंग, रिटेलिंग एंड ट्रेड, फोटोग्राफी, वीडियों एडिटिंग एंड अकांउटिंग, इंश्योरेंस, हॉसिपिटैलिटी, हाउस कीपिंग, फायर सेटी, बीपीओ, फॉरेन लैंग्वेज, टूर एंड ट्रैवेल, हेयर डिजाइन, ब्यूटी कल्चर जैसे शॉर्ट टर्म या वोकेशनल कोर्स युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ ही रोजगार के ज्यादा मौके भी दिला रहे हैं। आप दसवीं पास हों या बारहवीं के बाद ऐसे कोर्स की तलाश कर रहें हैं, जिससे नौकरी मिलने में सुविधा हो, तो वोकेशनल यो प्रोफेशनल कोर्स करें। जिंदगी का रास्ता बदल जायेगा। अधिक जानकारी के लिए पढ़ें यह रोचक लेख।

स्कूल से निकलने के बाद जैसे ही ग्रेजुएशन में दाखिले का समय आता है, तो सभी छात्रों के मन में यह सवाल बार–बार उठता है कि कौन–सा विषय चुनें। किस विषय में बैचलर डिग्री करना सही रहेगा, किस विषय को लेने से अच्छी जॉब मिलेगी और क्या करें, ताकि बेहतर भविष्य बनाने में कठिनाई न हो। कोर्स की अवधिकता और ऊपर से लोगों से मिलने वाले मुत के सुझाव से कई बार कॉलेज में जाने वाले नए छात्रों के मन में ऊहापोह की स्थिति हो जाती है। एक तरफ बीए, बीकॉम और बीएएसी जैसे पारंपरिक कोर्स है, तो दूसरी तरफ इंजीनियरिंग, मेडिकल, होटल मैनेजमेंट, फैशन टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट, आईटी, एनिमेशन, ग्राफिक डिजाइनिंग, एविएशन जैसे कई प्रोफेशनल कोर्स हैं, जिसमें नए सब्जेक्ट पढ़ने के साथ–साथ नई–नई बातों को जानने और कुछ नया और अलग करने का बेहतरीन मौका मिलेगा।

प्रोफेशनल डिग्री ही क्यों?

जिस तेज रतार से समय बदल रहा है, ऐसे में समय के साथ कदम–से–कदम मिलाकार चलने के लिए जरूरी है कि प्रोफेशनल डिग्री को अपने कैरियर का आधार बनाएं। प्रोफेशनल कोर्स में इंडस्ट्री व मार्केट की जरूरत को ध्यान में रखते हुए छात्रों को पढ़ाया जाता है। बात चाहें इंजीनियरिंग की हो, फैशन टेक्नोलॉजी या फिर एनिमेशन की.... इन जैसे तमाम प्रोफेशनल कोर्सेज के सिलेबस में समय–समय पर जरूरी बदलाव किए जाते रहे हैं और इसे पूरी तरह से मार्केट ओरिएंटेड बनाया जाता है, ताकि कोर्स के दौरान ही छात्र इंडस्ट्री की जरूरतों को आसानी से समझ ले और कोर्स खत्म होते ही बेहतर शुरूआत कर सकें।

प्रैक्टिकल नॉलेज पर फोकस

पारंपरिक कोर्स थ्योरी आधारित होते हैं, जिनके दम पर तुरंत नौकरी को छोड़कर यदि प्राइवेट सेक्टर की बात की जाए, तो वहां पर काफी गिने–चुने मौके मिल जाते है और सरकारी नौकरी में जिस तरह की प्रतियोगिता हैं, वहां पर सेलेक्शन होना भी आसान नहीं होता। लेकिन प्रोफेशनल कोर्स में प्रैक्टिल नॉलेज पर ज्यादा फोकस किया जाता है, छात्रों को कॉलेज में प्रैक्टिकल नॉलेज देने के साथ–साथ मार्केट की जरूरतों को समझाने और उसमें एक्सपर्ट बनाने के लिए कोर्स के दौरान समय–समय पर इन्टर्नशिप, वर्कशॉप आदि भी कराए जाते हैं। प्रोफेशनल डिग्री करने वाले छात्रों के लिए प्राइवेट सेक्टर में जॉब की असीम संभावनाएं हैं।

वैसे भी आज के समय लगभग सभी निजी कंपनियां और एमएनसी अपने यहां संबंधित क्षेत्र में प्रोफेशनल डिग्री और नॉलेज व स्किल्स रखने वाले प्रोफेशनल को ही वरीयता देती हैं। देश–विदेश में ऐसे लोगों की मांग हैं। कई बार छात्रों का कैंपस से ही सेलेक्शन हो जाता है। यानी बैचलर डिग्री पूरी होने से पहले ही देश–विदेशी कंपनियों में लाखों रुपयें तक के पैकेज पर जॉब पक्की हो जाती हैं। वहीं ट्रैडिशनल डिग्री लेने के बाद नौकरी के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती हैं।

यही नहीं प्रोफेशनल डिग्री करने वालों के लिए विभिन्न सरकारी विभागों और पब्लिक सेक्टर यूनिट में भी पोस्ट रिजर्व होते हैं। लेकिन उस तरह की तमाम सरकारी रिक्तियां भी जिसके लिए भी पारंपरिक कोर्स करने वाले अप्लाई कर सकते हैं, उसके लिए भी प्रोफेशनल डिग्रीधारी एलिजिबल होते हैं, क्योंकि अधिकांश प्रोफेशनल डिग्री अन्य ट्रेडिशनल डिग्री के समकक्ष होती हैं।

प्रोफेशनल नहीं, तो वोकेशनल

युवाओं के लिए आज के समय की मांग बन गई हैं वोकेशनल कोर्स। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार 'स्किल इंडिया' प्रोग्राम के तहत देश के बड़े शहरों से लेकर दूर–दराज के गांवों तक सभी जगह दसवीं/बारहवीं के बाद वोकेशनल कोर्स करवा रही है। वोकेशनल कोर्स डिग्री के साथ ऐसी स्किल्स सिखाते हैं, जो आत्मनिर्भर बनाने का काम करती हैं 10वीं से कम पढ़े–लिखे लोग भी इसे कर सकते हैं। इसमें हर कोर्स के हिसाब से अलग–अलग शैक्षिक योग्यता तय की जाती है। यानी 10–12वीं से ग्रेजुएट पास तक वोकेशनल कोर्स कर सकते हैं। वोकेशनल कोर्स में छह माह से लेकर दो साल तक की अवधि के सर्टिफिकेट, डिप्लोमा आदि मौजूद हैं। सरकारी कॉलेज और यूनिवर्सिटी के साथ तमाम छोटे–बड़े निजी संस्थानों में कई तरह के कोर्सेज में आसानी से नामाकंन हो सकता है। चाहें तो पत्राचार से भी ये कोर्स कर सकते हैं। बैचलर डिग्री में नामाकंन लेकर अपने विषय से संबंधित वोकेशनल कोर्स कर अपनी डिग्री और स्किल्स में वैल्यू एड करना फायदे का सौदा साबित होगा।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Boy 25/5'3" B.Com, CA, working in Infoys. Avoid Gotras: Dahiya, Maan, Huda, Rathi. Cont.: 9815005193
- SM4 Jat Boy 28/5'10" B. Tech. (Mechanical) from Thappar Patiala Working in US Company, Chicago Bridge XI Iron (CBI) in Dubai with salary 50 Lakh PA, Father Deputy CMO (Rtd.), Mother Lecturer (Physics) retired. Presently settled at Gurgaon, Rural/Urban property. Avoid Gotra: Mohan, Balhara, Nain, (Berwal & Sheoran avoid Direct) Cont.: 07838631908
- SM4 Jat Boy 27/5'8" B.A, LLB doing pratice at District Court Panchkula. Avoid Gotras: Balyan, Nehra. Cont.: 09416914340
- SM4 Jat Girl (DOB 07th Feb.1990) 25/5'10" B.Tech. (ECE), M.Tech. (ECE) from M.D.U. Rohtak. GATE Qualified. Running own Coaching Centre for graduate level students. Father Public Prosecutor Government of Haryana. Avoid Gotras: Kadian, Rathi, Sangwan. Cont.: 08447796371
- SM4 Jat Girl (DOB 02.10.80) 35.5/5'3" MS.c, M.Phil., B.Ed. Employed as Permanent Junior Lecturer in Haryana Government. Avoid Gotras: Nandal, Dalal, Sehrawat. Cont.: 08570032764
- SM4 Jat Girl (DOB 04.08.90) 25.8/5'4.5" M.C.A from P. U. Chandigarh. Employed as Software Developer (Alchemist IT Company Chandigarh). Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar, Cont.: 09463330394
- SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 24.2/5'4" M.Sc Physics from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar, Cont.: 09463330394, 09646712812
- SM4 Jat Girl 26/5'2" M.A. B.Ed. Avoid Gotras: Thakran, Sehrawat, Dahiya, Cont.: 09996480088
- SM4 Jat Girl 25/5'3" M.Com., B.Ed. HTET, CTET Cleared, Working as Guest Teacher in Govt. of Delhi. Avoid Gotras: Thakran, Sehrawat, Dahiya, Cont.: 09996480088
- SM4 Jat Girl (DOB 04.04.91) 25/5'4" B.D.S. Worked as Junior Resident in E.S.I. Hospital, Delhi. Running her own Clinic at Ranibagh, Delhi. Avoid Gotras: Dhankhar, Dalal, Dahiya, Cont.: 09416024301, 07835897187
- SM4 Jat Girl (DOB 15.05.92) 24/5'5" M.Sc. Chemistry from MDU Rohtak, Doing B.Ed. from M.D.U. Avoid Gotras: Mor, Dhariwal, Chahal, Cont.: 09416603097
- SM4 (Divorcee Issuelesss) Jat Girl (DOB August1987), 28.8/5'6", M.Tech. in Computer Engineering. Employed as Assistant Professor in Engineering College, Landra (Pb.) Avoid Gotras: Sangroha, Lohan, Panghal, Cont.: 09464141784
- SM4 Jat Girl 25/5'2" B.Tech (CSE) Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon, Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Boy 28/5'11" B. Tech. M.Tech from NIT Jaipur, Working as Planner in MNC Gurgaon. Avoid Gotra: Sangwan, Gulia, Bajiya, Cont.: 09467923726, 09466016340
- SM4 Jat Boy 26.9/5'7" M.C.A. Employed as Project Engineer in ORACLE Co. at Banglore with Rs. 7 Lac package PA. Avoid Gotras: Grewal, Antil, Dalal, Cont.: 09417629666

ist&1 dk ’k"k

Hkkbl lqjsUnz flag efyd ;knxkj vku nh LikV vf[ky Hkkjrh; fucU/k ys[ku çfr;ksfxrk & fnukad 04 tqykbZ] 2016

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला द्वारा दिनांक 04 जुलाई 2016 को सुबह 10 से 11 बजे तक कालेज, युनिवर्सिटी तथा दसवीं, 10+1 व 10+2 क्लास के विद्यार्थियों के लिए भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार आन दी स्पाट अखिल भारतीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता शहरी व ग्रामीण दो श्रेणियों में निम्नलिखित परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी।

1. Ch. Bharat Singh Memorial Sports School Nidani, Distt. Jind (Haryana)
2. Bhai Surender Singh Malik Memorial Girls Sr. Secondary School, Nidani (Jind)
3. Govt. Girls Sr. Secondary School, Shamlo-kalan, Distt. Jind (Haryana)
4. Govt. Girls Senior Secondary School Lajwana-kalan, Distt. Jind
5. Govt. Senior Secondary School Gatoli, Distt. Jind
6. Govt. Girls Senior Secondary School, Julana, Distt. Jind (Haryana)
7. Govt. Senior Secondary School, Julana, Distt. Jind.
8. Govt. Senior Secondary School, Kilazaffar Garh, Distt. Jind
9. Gyandeep Model High School Sector 18, Panchkula
10. Bhavan Vidyalaya, Near Market, Sector 15, Panchkula
11. C.L. D.A.V. Sr. Secondary School, Sector-11, Panchkula
12. Moti Ram Sr. Secondary School, Sector-27, Chandigarh

इस प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागी किसी भी परीक्षा केन्द्र पर प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये आवेदन कर सकता है। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम ईनाम 5100 रुपये व गोल्ड पदक, द्वितीय ईनाम 3100 रुपये व कांस्य पदक, तृतीय ईनाम 2100 रुपये व रजत पदक प्रदान किये जायेंगे। इसके इलावा 1500 रुपये, 1000 रुपये, 900 रुपये व 600–600 रुपये के 6 अन्य सांत्वना पुरस्कार दिये जायेंगे। प्रतियोगिता हिन्दी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में दी जा सकती है जो कि 1000 शब्दों से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

प्रतिभागी अपने नजदीक के किसी भी परीक्षा केन्द्र में 2 जूलाई 2016 तक आवेदन कर सकता है। निबन्ध का विषय प्रतियोगिता शुरू होने से पहले बताया जायेगा। परीक्षार्थीयों को परीक्षा के लिए केवल अपना पैन तथा कार्डबोर्ड लाना होगा जबकि उत्तर पुस्तिका केन्द्र पर उपलब्ध कराई जायेगी। विजेताओं को पुरस्कार बसन्त पंचमी तथा सर छोटूराम जयन्ती समारोह के अवसर पर प्रदान किये जायेंगे। इस प्रतियोगिता का सारा खर्च भाई सुरेन्द्र सिंह मैडिकल एजुकेशन तथा अनुसंधान निडानी (जीन्द) द्वारा वहन किया जायेगा।

कब और कैसे शुरू हुई कबड्डी

– सुमोधा चहल, हिसार

माना जाता है कि कबड्डी देश का सबसे पुराना खेल है। इसकी शुरूआत कब हुई, यह कहना मुश्किल है, पर यह तय है कि यह काफी पुराना खेल है। माना जाता है कि कबड्डी का जन्म तमिलनाडु में हुआ। कबड्डी शब्द तमिल काई–पीडि (चलो हाथ पकड़े हैं) से बना है। पंजाब, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु और महाराष्ट्र में इसे राज्य खेल का दर्जा हासिल है। हमारे देश की मिट्टी से जुड़े इस खेल के कुल 3944 रजिस्टर्ड क्लब है। कबड्डी हमारे पड़ोसी बांग्लादेश का राष्ट्रीय खेल है। वैसे हिन्दुस्तान की कबड्डी टीम दुनियां की बेताज बादशा है। 1990 में पहली बार कबड्डी को एशियाई खेलों में शामिल किया गया। तब से लेकर आज तक हर बार भारत गोल्ड मेडल जीता है। भारत के अलावा यह खेल बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान, मलेशिया और इंडोनेशिया में भी खेला जाता है।

सांस टूटा, तो आउट

कबड्डी के खेल में दोनों तरफ 7–7 खिलाड़ी होते हैं। 5–5 खिलाड़ी रिर्जव में रहते हैं। खेल का मैदान 12.5 मीटर लम्बा और 10 मीटर चौड़ा होता है और दो हिस्सो में बंटा रहता है। खेल 20–20 मिनट के 2 हिस्सो में खेला जाता है। अटैक करने वाली टीम का एक खिलाड़ी बिना सांस तोड़ कबड्डी–कबड्डी कहता हुआ दूसरी तरफ जाता है। उसकी कोशिश होती है कि एक सांस में विरोधी टीम के ज्यादा–सेज्यादा खिलाड़ियों को छुए और अपने खेमे में लौट आए। वह जितने खिलाड़ियों को छूता है, उसकी टीम को उतने ही नंबर मिलते हैं। अगर उसे विपक्ष के खिलाड़ी घेरने में कामयाब हो जाते हैं और उसकी सांस ही टूट जाती है तो वह खेल से बाहर हो जाता है। जिस टीम को ज्यादा नंबर मिलते हैं, वहीं विजयी रहती हैं।

कुश्ती जैसी ट्रिक और ताकत भी चाहिये

आप जब दोनों टीमों को कबड्डी खेलता देखते हैं या कभी इसका हिस्सा बनते हैं तो यहि महसूस करते होंगे या फिर ऐसा अहसास होता होगा कि कबड्डी में कुश्ती जैसी ट्रिक और ताकत चाहियें। इस बात को कबड्डी के बड़े खिलाड़ी भी कहते हैं। असल में तो बंदा कबड्डी–कबड्डी कहकर दौड़ता है उसे रेडर कहते हैं। रेडर को जहां पकड़े जाने से बचना होता है वहीं उसे यह भी ध्यान रखना होता है कि अगर पकड़ा जाता है तो उसे वापस कैसे जाना हैं कबड्डी के अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी अजय ठाकुर कहते हैं कि इसमें दोहरे अटेक करने पर रेडर उतना आक्रामक नहीं रहता है और हावी होने से पहले ही उसे दबोचने का भी फायदा होता है। अजय ठाकुर कई स्कूलों में छात्रों को इसका गुर सिखाते है।

अजय की तरह की कबड्डी के अन्य खिलाड़ी बताते है के यह फूर्ती का गेम है। विशेषज्ञ कहते हैं कि इस गेम में अंतिम समय तक अपना मनोबल बनाये रखना पड़ता है। यही नहीं हौसला बनाय रखने के अलावा इसमें सकारात्मक सोच की भी जरूरत है। कुश्ती की तरह ट्रिक भी अपनानी पड़ती है। जैसे कुश्ती में कई तरह के पछाड़ शुरू होते हैं उसी तरह कबड्डी में भी कई ट्रिक होते हैं। इस गेम में कभी भी खुद को कमतर नहीं आंकना चाहिए। लेकिन अन्य खेलों की तरह इसमें भी सामने वाले को कभी कम नहीं आंकना चाहिए। यानी दोनों ओर से बात बराबरी की होती है।

अलग–अलग आयु वर्ग में होने वाली कबड्डी प्रतियोगिता के लिये आज कई स्कूलों में तैयारियां कराई जाती हैं। लोगों को उम्मीद है कि आने वाले दिनों में यह खेल ओलंपिक जैसी प्रतियोगिताओं में शामिल होगा। इसमें भी प्रतिभाओं को मौका मिलेगा अपने हुनर को दिखाने का।

मिट्टी के मैदान में लें विशेष प्रशिक्षण

विशेषज्ञ कहते हैं कि मिट्टी के मैदान में कबड्डी का प्रशिक्षण लिया जाना चाहिए। इसमें शरीर को मजबूती के अलावा स्फूर्ति मिलती है। साथ ही कठिनाई से जुझने का जज्बा भी मिट्टी में खेलने से मिलता है।

यह एक ऐसा खेल है जिसके लिए न महंगे उपकरण और न ही विशाल स्टेडियम चाहिए। बस खेलों के शौकीन जमा हुए और पंद्रह–बीस खिलाड़ियों की टीम खेत खलियान कहीं भी प्रतियोगिता शुरू हो जाती है व गूंजने लगते हैं हुर कबड्डी–कबड्डी–कबड्डी के जोशीले सुर।

(अपराजेय भारत से साभार)

रोबोट बढ़ायेगा बेरोजगारी

– रेणु वमा

आंकड़ें डराने वाले हैं – हाल में क्लाज शाब, रिचर्ड सैमसन्स द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट के मुताबिक रोबोट बहुत सी नौकरियों खाने वाले हैं। शाब–सैमसन्स की रिपोर्ट का दावा है कि रोबोट तकनीक के चलते आने वाले पांच वर्षों अर्थात् वर्ष 2020 तक दुनिया भर में करीब पचास लाख नौकरियां खत्म हो जाएगी। इसमें व्हाईट कालर क्लर्कों की नौकरियां भी जाने की आंशका है। बहुत ही महत्वपूर्ण बात इस रिपोर्ट में कही गई है कि अब प्राइमरी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों में से करीब 70 प्रतिशत बच्चे वो काम, वो नौकरियां कर रहे होंगे, जो अभी मौजूद ही नहीं हैं। दरअसल 50 लाख नौकरियां आएगी, जो नई गतिविधियों, नए कौशल से जुड़ी होंगी यानी कुल नौकरियों का खात्मा करीब 50 लाख के आसपास होगा।

तकनीक ने भारत में बहुत नोकरियां खोई हैं, इसके बावजूद तकनीक के विकास को रोका नहीं जा सकता है। उसके समग्र परिणामों पर विचार करके रणनीतियां बनाई जा सकती हैं। जैसे अभी भारत में होने वाले कुल रेल रिजर्वेशन टिकटों का करीब 40 प्रतिशत आनलाइन तरीके से बुक होता है। हममें से अधिकांश लोग दिमाग पर जोर डालें कि आखिरी बार हम कब स्टेशन गए थे कोई रेल टिकट खरीदने, तो याद नहीं आएगा। इंटरनेट पर, मोबाईल एप्लीकेशन के जरिए ही रिजर्वेशन हो रहे हैं। अब इसका एक असर यह है कि जो काम रेल–क्लर्क करता, वह काम हम मोबाईल एप्लीकेशन पर या इंटरनेट कैफे में कोई और कर रहा है। वह काम रेल से शिट होकर बाहर चला गया है। रेल में रोजगार कम हुआ, इसके लिए तकनीक की जिम्मेदारी है, पर तकनीक की रतार पर ब्रेक नहीं लगाया जा सकता।

रोबोट बहुत विकसित तकनीक पर काम करता है। यह छोटे–मोटे नहीं, बहुत जटिल काम भी कर सकता है। रोबोट सुरक्षा, बैंकिंग से लेकर शिक्षा तक के कारोबार में आ सकता है। बल्कि कई मामलों में तो आ ही गया है और मजबूरी से आ गया है। अमेरिका में कुछ हस्पतालों में दवा देने का काम रोबोट ही कर रहे हैं। ना सिर्फ दवा दे रहे हैं, बल्कि आपरेशन वगैरह में भी रोबोट अपनी क्षमताओं के चलते मदद दे रहे है। जिन मामलों में इंसानी हाथों की सीमाएं होती हैं, वहां रोबोट मदद करते हैं। उदाहरण के लिए इंसानी कलाई सिर्फ दो दिशाओं में घूम सकती है जबकि रोबोटिक भुजा आठ दिशाओं में घूम सकती है। अमेरिका में कार्यरत सर्जन डाक्टर हिमांशु वर्मा के मुताबिक इस खुबी की वजह से रोबोट मेडिकल साईस में बहुत बड़ी भूमिका निभा रहें हैं। हां, यह भूमिका किसी डाक्टर के निर्देशों के तहत ही निभाई जाती है। अमेरिका में कानून से जुड़े शोध कई मामलों में मशीन ही निपटा रही हैं। मोटे तौर पर रोबोट वह काम करते हैं, जिनमें एक स्तर का मशीनीकरण है, जिसमें मानवीय निर्णयों, रचनात्मकता की जरूरत नहीं हैं। जैसे नोट गिनने का काम रोबोट कर सकता है। 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत किसी प्लांट में तमाम साज–सामान को कहाँ ले जाकर रखने, कज–पुर्जों को फिट करने का काम रोबोट कर सकता है। पर रोबोट उन कामों को करने में समर्थ नहीं होगा, जिनके लिए मानवीय निर्णय और रचनात्मकता की जरूरत होती है। पर तकनीक जिस गति से आगे बढ़ रही है, संभव है कि वो काम भी रोबोट कर ले। गूगल की ड्राइवरविहीन कार, जो बड़े आराम से चल रही है। भारत में तो अभी ड्राइविंग मानव के बगैर संभव नहीं है, पर क्या पता पांच–सात–दस सालों बाद ड्राइवरविहीन कार भारत में भी संभव हो जाए, तब तमाम ड्राइवरों की नौकरी का क्या होगा? मतलब तमाम क्षेत्रों में रोबोट–जनित बेरोजगारी का खतरा मंडरा रहा है। भारत जैसे देश के लिए चुनौतियां दोहरी हैं। भारत जैसा देश तकनीक के मामलों में पीछे नहीं रहना चाहेगा और यह भी नहीं चाहेगा कि रोजगार के अवसर कम हों। रोजगार का मसला भारत में सिर्फ तकनीक का नहीं, आर्थिक और राजनीतिक मसला भी है। कई क्षेत्रों में, इन सवालों की पड़ताल अभी से बहुत जरूरी है। क्योंकि हमें देखना है कि जो क्षेत्र, जो रोजगार, जो काम भविष्य में विकसित होने वाले हैं, उनके लिए विद्यार्थियों को अभी से तैयार करना जरूरी है।

(रा. पत्रिका से साभार)

यादें

–पूनम सिंह

यादें भी हैं अजब पहेली
बिन बुलाई बचपन की सहेली
कभी हंसाती
कभी रूलाती
कभी खिलखिलाती
कभी तड़पाती
कभी इनसे दिल भर आता
कभी आंख भर आती
एक पल में यहां
दूसरे पल बरसों पीछे ले जाती
चाहो कितना भी छोड़ना
पर ये कहां छोड़ती
जितना भागो दूर इनसे
उतना करीब आती
छोड़ेंगी ये कभी न साथ
जब तक सांस, तक तक याद

स्वतंत्रता सेनानी, जाट संत गंगा दास

(झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का दाह संस्कार करने वाला जाट संत)

– डा. जगन्नाथ शर्मा

यदि कोई पूछे कि 18 जून 1858 को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का दाहसंस्कार किसने किया था? हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता का प्रथम बिगुल किसने बजाया? आधुनिक काल के प्रथम कवि एंव खड़ी बोली के प्रथम समर्थ कवि कौन थे? अंग्रजी शासन की आलोचना सबसे पहले अपने साहित्य में किसने की? खड़ी बोली की कृत्रिमता समाप्त करके उसे लोकतत्वों से सम्मान किसने किया। इन सभी प्रश्नों का उत्तर है "संत गंगादास ने"।

महान दार्शनिक, भावुक्त भक्त, उदासी महात्मा, महाकवि गंगादास का जन्म, दिल्ली मुरादाबाद मार्ग पर स्थित बाबूगढ़ छावनी के निकट रसूलपुर ग्राम में सन् 1823 की बंसत पंचमी को हुआ था। उनके पिता चौधरी सुखीराम मुण्डेर गोत्र के जाट और एक बड़े जमींदार थे। इनकी माता का नाम दाखा था, जो हरियाणा में बल्लभगढ़ के निकट दयालपुर की रहने वाली थीं। हरियाणा के सर्वश्रेष्ट लोककवि एवं लोकनाट्यकार पं. लख्मीचन्द के गुरू पं. मानसिंह (ग्राम–बसौद, जि. सोनीपत), तथा मानसिंह के गुरू मवासीनाथ (ग्राम–निनाणा, जि. बागपत) थे और मवासीनाथ के गुरू संत गंगादास थे। इस प्रकार पं. लखमीचन्द भी संत गंगादास की शिष्य परम्परा में थे।

अपने ग्वालियर निवास के समय संत गंगादास ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और उनकी सखी मुन्दर को दीक्षा देकर उन्हें राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया तथा अंग्रेजों से युद्ध करने और भारत को स्वतंत्र कराने हेतु संतों की एक सेना भी इस संत ने बनाई थी। रानी के शहीद होने के पश्चात् इस संत सेना का अंग्रेजी फौज से ग्वालियर में युद्ध हुआ, जिसमें 753 संत शहीद हुए। संत गंगादास तो अपने शिष्यों के आग्रह पर गढ़मुक्तेश्वर आ गए, किन्तु रानी लक्ष्मीबाई और संतों का हत्यारा अंग्रेजों की सेना का सेनापति जरनल ह्मरोज फेजर इतना घायल हो गया कि उसे इलाज के लिए मसूरी लाया गया। यहां युवा भारतीयों को जीवित भूनकर उनकी चर्बी से एक मरहम तैयार किया जाता था और इससे अंग्रेज घायलों का इलाज होता था। इससे भी फेजर बच नहीं पाया। उसकी मृत्यु मसूरी में ही 12 अगस्त, 1858 को हो गई और कैमिलबैक रोड़ के ईसाई शमशान में उसे दफन कर दिया गया। स्मरणलेख सहित इसका मकबरा वहां आज भी मौजूद है।

लोकमान्य तिलक की भांति गंगादास में भी राष्ट्रीयता और अध्यात्म की दोनों धाराएं समानान्तर रूप से चल रहीं थी।

'कांशी' से शिक्षा प्राप्त करके भ्रमण करते हुए संत गंगादास 1855 में मध्य प्रदेश के ग्वालियर नगर के पास सोनरेखा नामक नाले के निकट कुटी बनाकर रहने लगे थे। वहीं उन्होंने 18 जून, 1858 को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का दाह संस्कार किया था, जिसका उल्लेख वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'झांसी की रानी' पुस्तक में तथा अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थों में भी उपलब्ध होता है। 'गंगादास शाला' वहां आज भी स्थित है।

हिन्दी–साहित्य में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध राष्ट्र–प्रेम और स्वतंत्रता का सर्वप्रथम बिगुल बजाने वाले संत गंगादास (1823–1913) का काव्य ज्ञान भक्ति और राष्ट्रप्रेम की त्रिवेणी है। खड़ीबोली क्षेत्र अथवा कुरूप्रदेश की संस्कृति का संजीव चित्रण उनके काव्य में कलात्मक रूप से किया गया उपलब्ध है। आधुनिक कालीन काव्य में संत गंगादास का महत्त्व असंदिग्ध रूप से स्वीकार्य है। यही कारण है कि 1970–2000 के अन्तराल में 15 शोधार्थियों ने उनके काव्य के विधि पक्षों पर अपने शोधग्रन्थ लिखे, किन्तु राष्ट्रप्रेम, संस्कृति और भाषा की दृष्टि से इसका अध्ययन समुचित रूप से नहीं हुआ। इसी अभाव की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मार्च, 2001 में एक 'वृहत शोध परियोजना' स्वीकार की थी, जिसमें 'संत गंगादास–वाडमयः साहित्य, समाज और भाषा' नामक शोध–कार्य तीन वर्ष में ही सम्पन्न करना था। अनुसंधाता ने समय पर ही इस कार्य को पूर्ण किया। इस शोध–परियोजना के सम्पन्न होने से अनेक नवीन तथ्यों का पता चला है, जिनमें संत गंगादास द्वारा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने हेतु प्रेरणा देना,, उनका दांह संस्कार करना, सवतंत्रता प्राप्ति के लिए संतसेना का निर्माण करना, इस सेना का ग्वालियर में अंग्रेजों से युद्ध करना, जिसमें 753 संतों का बलिदान होना, तत्पश्चात संत गंगादास का गढ़मुक्तेश्वर (जिला गाजियाबाद)

में निवास और यहां रहकर भी स्वतंत्रता सेनानियों से सम्पर्क बनाए रखना आदि मुख्य है।

"नीतिहान राजा अन्याई, वेद विरोधी शठ दुखदाई" आदि गंगादास के कथन सिद्ध करते हैं कि राजा और प्रजा दोनों के लिए नैतिक नियमों का पालन वे आवश्यक मानते हैं। प्रशासक–प्रशासित दोनों वर्गों के व्यक्तियों के लिए ही उन्होंने नीति निर्धारण किया तथा उनके अनैतिक कार्यों की ओर ध्यान आकर्षित करके नैतिकता की आवश्यकता पर भी बल दिया।

राजनीति का वर्णन करते हुए उन्होंनें राम–राज्य के आदर्श और रावण–राज्य के अनैतिक कार्यों का चित्रण प्रस्तुत किया। "भूप दण्ड देते नहीं, भई पाप की मेज" आदि की भांति अंग्रेजों के कुशासन की ओर भी जनता का ध्यान आकृष्ट किया। राजा के लिए दया, धर्म, विद्वानों का सम्मान, पापियों को दण्ड, प्रजा–वत्सलता आदि गुणों की आवश्यकता पर बल दिया तो प्रजा के लिए भी उन्होंने अपने–अपने वर्णाश्रम के अनुसार सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों के निर्वाह का संदेश दिया। सभी धर्मों में वे मानवता के धर्म को सर्वश्रेष्ट मानते हैं और धर्मा के नाम पर अनेक पंथ और सम्प्रदायों की अनावश्यकता अनुभव करते हुए उन्होंने उनकी स्पष्ट आलोचना की है।

समन्वित रूप से कहा जा सकता है कि अनैतिक आडम्बरों, अन्धविश्वासों, बाहरी दिखावे आदि को वे सांस्कृतिक और मानसिक प्रदुषण मानतें हैं, जिससे समाज और व्यक्ति दोनों की हानि हो रही है और राष्ट्र भी निर्बल हो रहा है।

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय भावना और स्वतंत्रता का बिगुल बजाने वाले प्रथम कवि संत गंगादास ही हैं। संत गंगादास ग्वालियर से प्रस्थान कर जिला गाजियाबाद में गढ़मुक्तेश्वर के प्रसिद्ध तीर्थस्थल पर रहने लगे थे। वहां रहकर वे अध्यात्मिक साधना के साथ–साथ स्वतंत्रता हेतु भी कार्यशील रहे। वे सफेद घोड़ा रखते थे और उसी पर सवार होकर 1911 ई. के दिल्ली दरबार में भी उन्होंने भाग लिया था। उनके काव्य में कलिप्रकोप के ब्याज से, तत्कालीन राजनैतिक अस्थिरता के फलस्वरूप स्वार्थपरता और प्रजा के पाप कर्मों का, कई स्थानों पर चित्रण किया गया है। 'यथा राजा तथा प्रजा' के सिद्धान्त को मानने वाले संत गंगादास जनता में फैले इन समस्त पापों का कारण नीतिहीन और अन्यायी राजा को मानते थे। उनके द्वारा की गई शासन की इस प्रकार की निर्भीक आलोचना को देखकर हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य में राजनीतिक और राष्ट्रीय चेतना का आरम्भ भारतेन्दु युग से पूर्व गंगादावस कर चुके थे और इन्होंने अंग्रेजी शासन की खुले रूप में आलोचना की थी। अंगेजों को तस्कर बताते हुए उन्होंने उनके द्वारा की गई लूट की घोर निन्दा की थी।

खड़ी बोली के प्रथम समर्थ कवि संत गंगादास की हिन्दी साहित्यस में प्रथम खोज 1970 में तब हुई थी जब आगरा विश्वविद्यालय ने लेखक का पी.एच.डी. हेतु 'संत गंगादासः व्यक्तित्व एवं कृतित्व' नामक शोधप्रबंध स्वीकार किया। अपने डी. लिट् के शोधकार्य में भी 'उदासीन सम्प्रदाय के हिन्दी कवियों' के अन्तर्गत इस कवि पर केवल एक अध याय लिखा गया था। 1970 से 2000 ई. तक अनय शोध कार्य भी इस कवि के विविध पक्षों पर किये गये, किन्तु फिर भी इस कवि के जीवन, राष्ट्रीय भावना, भाषा आदि पक्ष अछूते ही रहे थे। समाचार पत्रों में भी यद्यपि पर्याप्त चर्चा इस पर हुई तथापि उपर्युक्त पखों पर शोध–कार्य का अभाव ही बना रहा। शोध–कार्य के परीक्षकों, समीक्षकों और हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वानों ने संत गंगादास के काव्य की भूरि–भूरि प्रशंसा भी इस प्रकार की है :

"ज्ञान, भक्ति और काव्य की दृष्टि से संत कवि गंगादास विशेष प्रतिभावान रहे हैं, परन्तु उनका काव्य उपलब्ध न होने के कारण हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनका उल्लेख नहीं हो सका था। डा. जगन्नाथ शर्मा ने अत्यन्त मनोयोग से इस कवि की रचनाएं खोजकर और उनकी सुन्दर समालोचना प्रस्तुत करके एक महत्वपूर्ण शोध ा–कार्य किया है।"

– डा. रामकुमार 'वर्मा'

"संत कवि गंगादास का काव्य भारतेन्दुपूर्व खड़ी बोली हिन्दी काव्य का उच्चतम निर्देशन है और हिन्दी साहित्य के इतिहास की अनेक पुरानी मान्यताओं के परिवर्तन का स्पष्ट उद्घोष भी करता है।"

– डा. विजयेन्द्र 'स्नातक'

वर्ष 1913 में जन्माष्टमी को प्रातः छह बजे जब ब्रह्मलीन हुए तो श्रद्धालु भक्तों, महात्माओं एवं उनके शिष्यों ने उनकी इच्छानुसार संत का पार्थिक शरीर परम पावनी गंगा में प्रवाहित कर दिया। उनकी शवयात्रा में सहस्रों संतों और समाज के सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से भाग लिया और विशाल शोभायात्रा निकाली। अपने 90 वर्ष के जीवनकाल में उन्होंने विपुल साहित्य का प्रणयन किया, जिसमें से लगभग 8000 पद प्राप्त हो चुके हैं।

इंटरनेट बना हमारा सामूहिक दिमाग

- अनामिका

पिछले कुछ वर्षों में इंटरनेट ने हमारी दुनिया ही बदल दी। यह बदलाव किस हद तक क्रांतिकारी है, इसके बारे में तरह–तरह के विचार किए जा रहे हैं। कुछ वैज्ञानिकों के विचार भी इस सिलसिले में बहुत क्रांतिकारी हैं। उनका कहना है कि इंटरनेट एक मायने में उत्क्रांति या मानव विकास का अगला कदम है, जिसने इंसान के ज्ञान पाने या महसूस करने के बुनियादी तरीके में बदलाव कर दिया है। इसे ऐसे समझें कि 25 लाख साल पहले वानरों की वे प्रजातियां असितत्व में आई, जिनसे इंसान का अन्य वानरों से अलग विकास शुरू हुआ, जिसके अनेक चरण हम जानते हैं। इंसान के विकास शुरू हुआ था, जिसके अनेक चरण हम जानते हैं। इंसान का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष था उसके दिमाक का विकास। प्रकृति में अन्य जीवों में शरीर और दिमाग का जो अनुपात है, उसे देखते हुए शरीर के आकार की तुलना में इंसानी दिमाग बहुत बड़ा है। इंसानी दिमाग का सबसे विकसित हिस्सा इसका ऊपरी और आगे किा हिस्सा है, जिसे प्रीफ्रंटल लोब कहते हैं और जिसकी मानव सभ्यता के विकास में एक बड़ी भूमिका है। अब वैज्ञानिक कह रहे हैं कि इस विकास की अगली कड़ी इंटनेट है, जो एक अर्थ में हमारे दिमाग के एक नए हिस्से की तरह काम कर रहा है। यह मानव इतिहास में एक नई शुरूआत है, इंसानी दिमाग के विकास के बाद की यह दुसरी बड़ी शुरूआत है।

हम इस तरह सोचें कि इंटनेट हमारे लिए क्या है? वह ज्ञान, सूचनाओं और अनेक किस्म के बौद्धिक कामों का एक विशाल तंत्र है, जो हम सबको जोड़े हुए है। अब हम कोई भी फैसला करते हुए या विश्लेषण करते हुए सिर्फ अपने जैविक दिमाग में उपलब्ध ज्ञान या सूचना का इस्तेमाल नहीं करते, बल्कि इस विशाल तंत्र में मौजूद तमाम ज्ञान और सूचनाओं का इस्तेमाल करते हैं। यह सुविधा पहले कभी नहीं थी। पहले हम अपने दिमाग में उपलब्ध ज्ञान और सूचनाओं के अलावा उपलब्ध किताबों और कुछ लोगों की सलाह तक निर्भर रह जाते थे। अब करोड़ों दिमाग और इंटरनेट के तंत्र में उपलब्ध तमाम ज्ञान या जानकारियां हमारे दिमाग से जुड़ी हुई है।

वैज्ञानिक कहते हैं कि इन मायने में हम अब एक दिमाग की तरह नहीं, बल्कि काफी हद तक आपस में जुड़े हुए दिमागों के एक तंत्र की तरह सोचते हैं। हम पहले भी किसी समाज के मन या समझ की बात करते थे, मसलन हम कहते हैं कि मतदाताओं ने अमुक जनादेश दिया। हम जानते हैं कि सारे मतदाता आपस में सलाह करके कोई फैसला नहीं कर सकते, फिर भी इस धारणा के साथ बात करते हैं, मानो मतदाताओं ने एक दिमाग की तरह सोचते हुए यह फैसला किया है कि इस पार्टी को इतनी सीटें मिलनी चाहिए, दूसरी पार्टी को इतनी सीटें मिलनी चाहिए वगैरह। लेकिन यह सामूहिक मन या समझ का विचार अमूर्त या अधि–भौतिक स्तर पर होता था, अब इंटरनेट ने इस सामूहिक समझ को एक भौतिक रूप दे दिया है।

इस सामूहिक दिमाग के ज्यादातर आयाम हससे अभी अछूते हैं मलिन बस्ती के कुछ निरक्षर बच्चों के बीच काम कर रहे एक शिक्षा विशेषज्ञ का कहना है कि इंटरनेट ने सीखने की प्रक्रिया ही बदल डाली है। नई पीढ़ी जिस प्रक्रिया से सीख रही है, वह पिछली पीढ़ियों से काफी अलग है। यह पीढ़ी इस सामूहिक दिमाग का प्रभावशाली इस्तेमाल करना सहजता से, अनजाने ही सीख जाती है, जिसे समझना पुरानी पीढ़ी के लोगों के लिए मुश्किल है। शायद अब इंटरनेट अन्य टेक्नोलॉजी की तरह एक टेक्नोलॉजी नहीं हैं, अब वह एक जैविक विकास है, वह हमारी चेतना का एक और आयाम है, जो उद्घाटित हो रहा है। यह ज्ञान का भंडार है।

(हिन्दुस्तान से साभार)

काना राजा

-राही, जयपुर

रिजर्व बैंक के गवर्नर रघुराज राजन ने पिछले दिनों बातों ही बातों में भारतीय अर्थव्यवस्था को 'अंधों में काना राजा' बताया था। उनकी बात सुन हमें तो मजा आया कि चलो आज के बखत में कोई तो हुआ जो थोड़ी सच्ची बात कह रहा है लेकिन उनकी इस बात से केन्द्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री निर्मला सीतारमण नाराज हो गई। वे बोली कि शब्दों का चयन ठीक किया जा सकता था। जहां तक भारतीय अर्थव्यवस्था में अभी पूर्णतः ठहराव नहीं आया है। आज भी भारत की अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ होने के पीछे बहुत बड़ा कारण वह धन है जो कि सेवा के रूप में हम विदेशों से प्राप्त कर रहे हैं। हमारे लाखों युवक पूरी दुनियां में जाकर काम कर रहे हैं और वहां से कमाये अरबों–खरबों रुपये वे भारत भेजते हैं। क्या देश के

भीतर औद्योगिक उत्पादन में हम सिरमौर हो पाये हैं? हम चीन से मुकाबला तो करने की सोचते है लेकिन चीन के बराबर औद्योगिक उत्पादन कर पाते हैं? कसम से हमारा कतई मन नहीं करता कि हम चीन की बनी चीजें घर में वापरे। लेकिन ध्यान से देखने पर पता चलता है कि मोबाईल फोन से लेकर प्लास–पेचकस तक हम चीन में बने उत्पादों को ही काम में ले रहे हैं। यह तो नरेन्द्र भाई मोदी की किस्मत ठीक समझिए कि हर वक्त पेट्रोल के दामों पर लगाम लगी हुई हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूती से टिकी रही थी। वित्तमंत्री अरूण जेटली ने तो कई बार पैंतरे बदले लेकिन हमेशा रघुराम राजन ने अपने पांवों को जमीन पर टिकाये रखा और सरकार को ऐसे लोकप्रिय फैसले नहीं करने दिए जिनसे कुछ देर तक तो वाहवाही मचती लेकिन थोड़ी–सी विपरीत परिस्थिति आती तो फिर अर्थव्यवस्था को ढेर होने से बचाना मुश्किल हो जाता। यह तो आम भारतीय की आदत है कि वह बुरे दिनों का ख्याल करके बचत करता है लेकिन वर्तमान सरकार चाहती है कि लोग बचत न करें और खर्च करने की आदत डालें। बचत कम करने से बाजार में ज्यादा पैसा आएगा और लगेगा कि अर्थव्यवस्था बढ़ रही है। लेकिन संकट के समय यही बचत काम आती है। विकास की गति और आंकड़ों की छलांग लगाते देखने वालो से हम यही कहना चाहते हैं कि भाई साहब लोगों, तेज दौड़ने का नाटक मत करो वरना जल्दी हांफ जाओंगे और गलती से पांव उल्टे–सीधे पड़ गए तो दो मिनट में दिन में तारे नजर आ जांएगें। यूरोप और अमेरिका जाकर गाल बजाने वालों जरा देश के किसानों, छोटे व्यापारियों, कामगार मजदूरों की हालत पर भी गौर फरमाओं। इनकी हालत देख कर तो यही कहना पड़ा 'घर में नहीं दाने और सरकार चली भुनाने।'

(रा० पत्रिका से साभार)

अनुभव है जीवन की राह

जिंदगी की वास्तविक समझ अनुभव से पैदा होती है। हम अपनी क्षमताओं का समुचित आकलन और नियोजन अनुभव के माध्यम से ही कर सकते हैं। अनुभव किए बगैर न तो हम अपनी जिंदगी जी सकते हैं और न ही अपने अंदर समाई दिव्य क्षमताओं का परिचय पा सकते हैं। इस सबको जानने, समझने और सही नियोजन करने के लिए हमें उसी रूप में उन्हें महसूस करना चाहिए। हम आखिर हैं कौन ? और हमारे अंदर क्या है जो बाहर फूटकर आना चाहता है? क्षमताएं अंदर सुप्त रूप में पड़ी रहती हैं। इन्हें गहराई से महसूस करेंगे। इन्हें हम जितना महसूस करेंगे, उनकी पहचान उतनी ही अधिक होगी।

क्षमताओं को महसूस करना कोई बौद्धिक व्याख्या नहीं है और कोई तर्क भी नहीं है कि यह ऐसा होगा या नहीं होगा। इनके बारे में तभी सार्थक रूप से बताया जा सकता है जब इनकी बारीकियों को हम महसूस करेंगे। जीवन में असीम क्षमताएं समाई हुई हैं, परन्तु ये सोई पड़ी हैं ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं हैं, जो इन दिव्य विभूतियों से वंचित होगा। सभी में ऐसी महान विभूतियां समाई हैं कि उनके एक अंश उभरकर सामने आने पर मनुष्य कहां से कहां पहुच सकता है। जीवन की राहें कांटों से अटी पड़ी हैं और इन कांटों को भेदकर गुलाब का सुखद स्पर्श किया जा सकता है। एक ने जिंदगी से निरी कल्पना की, तर्क किया, परन्तु दूसरे ने उसका यथार्थ अनुभव किया और उसने अनुभव के लिए अपनी समस्त कुशलता को झोंक दिया। इसके बाद ही वह सब कुछ उपलब्ध कर सका। क्षमता को सतत प्रक्रिया से उभारा जा सकता हैं निरन्तर प्रयास से क्षमता निखरती हैं, परन्तु इससे ठीक विपरित रूक जाने से यह छिप जाती है, ढक जाती है। क्षमता की सही समझ और परिस्थितियों के सही नियोजन से विकास की ऐसी अविरल धारा फूट पड़ती है, जिसे हम 'प्रतिभा' कहते हैं। प्रतिभा कुछ नहीं हैं, बल्कि हमारी क्षमताओं एवं परिस्थितियों के बीच सामजस्य स्थापित कर श्रेष्ठ और नया करने के लिए सतत अवसर तलाशने और उसे कर गुजरने के हौसले का नाम हैं। प्रतिभा अपनी असमताओं में जीती है, उन्हें अनुभव करती है, परन्तु ध्यान रहे, हम परमात्मा नहीं हैं कि सब कुछ कर सकते हैं।

युगों-युगों तक अमर रहेंगे सर छोटूराम

—नरेंद्र विद्यालंकार

सर छोटूराम जैसा व्यक्ति अब कभी पैदा नहीं होगा। वे जो कहते थे वैसा ही आचरण भी करते थे। भ्रष्टाचार और कायरता उनकी डिक्शनरी में नहीं था। उनके जीवन का एक ही मकसद था —गरीब का उद्धार। किसानों की बुलंद आवाज तो कई नेता बने लेकिन ज्यादातर का उद्देश्य वोट की राजनीति रहा। किसानों का हित सैकेंडरी था। चौ. चरण सिंह, देवी लाल, कुंभाराम आर्य, बंसीलाल ने किसानों के लिए कई ऐसी योजनाओं की शुरुआत की जिससे केंद्र और राज्य सरकारों के कान खड़े रहे लेकिन अपनी कुर्सी को तिलांजलि देने वाली कुर्बानी किसी नेता ने नहीं दी। जबकि सर छोटूराम ऐसे नेता थे जिन्होंने ठीक दाम नहीं देने के लिए अंग्रेज सरकार को भी ललकार कर फसल की कीमत दिलाने का अदम्य साहस दिखाया था। आज है किसी में इतनी हिम्मत जो मौजूदा सरकारों में धमकी देकर किसानों का हित साध सके।

हरियाणा में तीन महीने पहले धान की वाजिब कीमत नहीं दी गई। मंडियों से धान उठते ही व्यापारियों ने एक क्विंटल पर पांच–सात सौ रूपए कमाये। क्या हुआ हरियाणा के कृषि मंत्री, केंद्रीय मंत्री और सर छोटूराम के नाम की कमाई पर राजनीति करने वाले बीरेंद्र सिंह और वित्त मंत्री अभिमन्यु का। थोड़ा हल्ला किया और चुप हो गए। इतना बड़ा घोटाला और लंबी तान कर सो गए। किसान का दर्द होता हो कुर्सी पर दांव लगाते। तब मानते कि किसानों के लिए उनके मन में पीड़ा है। मैं नहीं मानता इनमें से कोई भी हिम्मत करता तो सरकार समाधान नहीं निकालती। इन तीनों के सामने सुनहरा मौका था किस की आवाज को उठाने का। किसान नेता को स्वतः बन जाता।

सर छोटूराम कितने जीवट वाले व्यक्ति थे, बहुत कम लोग जानते हैं। कर्जा माफी बोर्ड बनाकर किसानों को जब सूदखोरों के चंगुल से निकाल दिया तो सूदखोर भड़क गए और सरकार की नतिक के खिलाफ रोहतक में एक बड़ी रैली का ऐलान कर दिया। कर्जा माफी बोर्ड का चेयरमैन हरियाणा के पूर्व शिक्षा मंत्री चौ. माडू सिंह मलिक को बनाया था। अंग्रेज शासक और पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री घबरा गए कि सर छोटू राम ने यह क्या बखेड़ा खड़ा कर दिया। उस समय बैंकों की बजाए लोग सूदखोरों से कर्ज लेते थे और अनपढ़ किसानों को बही–खातों में ही उलझाए रखते थे। किसान भी मजदूर थे। परिस्थितियां विकट थी और सूदखोरों में आक्रोश था। सर छोटूराम ने फैसला किया कि वे सूदखोरों की रैली में जाकर अपना पक्ष रखेंगे। हितचिंतकों ने हालात को देखते हुए सर छोटूराम को रैली में जाने से मना किया। लेकिन अंतर आत्मा की आवाज के साथ सर छोटूराम रैली में गए। जब वे रैली में पहुंचे तो उनके खिलाफ जोरदार नारेबाजी हुई। जब रैली खत्म हुई तो तब के अखबारों में सुर्खियां थी– "सर छोटूराम मुर्दाबाद के साथ में पहुंचे और जिंदाबाद के साथ लौटे।" वे रैली में एक घंटा से ज्यादा बोले। एक लाख लोग अवाक थे। छोटूराम ने जो तर्क दिये सूदखोर उनके कायल हो गए।

उनकी बहादुरी का यह अकेला उदाहरण नहीं। पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री सर सिकंदर हयात खां सर छोटूराम को सम्मान के नाते चाचा जी के नाम से संबोधित करते थे। आज है कोई व्यक्ति जिसे यह सम्मान कोई शीर्ष नेता देता हो। कारण था कि वे चाहे किसान किसी जाति का हो वे सबकी आवाज थे। सम्मान तभी मिलता है जब आपका व्यक्तित्व हो।

एक और बात, सर छोटूराम दो बातों पर जोर देते थे– एक दुश्मन को पहचान ले और दूसरा बोलना सीख ले। सर छोटूराम को दुनिया से गए छह दशक से ज्यादा हो गए। दोनों ही बातों को किसानों ने आत्मसात नहीं किया है। जब चुनाव आता है आलोचनाओं में उलझकर अपने को सब जातियों से अलग खड़ा कर लेता है और ऐसे दलों और उम्मीदवारों को वोट डाल देता है जो अहसान ही नहीं मानता। उसी का नतीजा है कि हरियाणा का एक सांसद खुलकर जाटों को गालियां दे रहा है। चार और जातियों को भी आरक्षण मिला था, सांसद सैनी उनका नाम भी नहीं लेता।

बसंत पंचमी पर सर छोटूराम को याद किया जाता है। नेता बड़ी–बड़ी बातें करके चले जाते हैं लेकिन होना–जाना कुछ नहीं होता। जब तक कोई संकल्प नहीं लिया जाएगा, जगह–जगह समारोहों का कोई मतलब नहीं। बीरेंद्र सिंह केंद्र में मंत्री हैं। भाजपा ने उन्हें इसीलिए मंत्री बनाया है कि वे सर छोटूराम के नाती हैं और भाजपा बीरेंद्र सिंह के बहाने जाटों में घुसपैठ रखना चाहती है। सर छोटूराम के बीरेंद्र सिंह नाती नहीं होते तो वे कभी के हरियाणा की राजनीति से बाहर हो जाते।

वक्त है वे सर छोटूराम का नाती होने का कर्ज चुकाएं और किसानों की जो माली हालत है उसके लिए ऐसी नीति बनवाएं ताकि लोग कह सकें बीरेंद्र सिंह थोथा चना नहीं है।

मुझे दुख होता है जब हम हस्तियों को एक जाति तक समेट देते हैं। सर छोटूराम, भीमराव अंबेडकर, परशुराम, वाल्मीकि, अग्रसेन और दूसरी जातियों में पैदा व्यक्तियों को एक जाति के समारोह तक सीमित कर दिया जाता है। इनके काम सबकी भलाई के लिए थे। सर छोटूराम जाट के घर पैदा हुए लेकिन काम तो सभी जातियों के गरीब किसान–मजदूरों के लिए किये थे। आज एक बार फिर किसानों को समवेत स्वर में उठ खड़ा होने की जरूरत है। अलग–अलग राग रहा तो नेताओं की तो चांदी रहेगी, किसान ठोकरें खाता रहेगा।

दो साल पहले मैं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से चुनाव के सिलसिले में गांधी नगर (गुजरात) में मिला था। मेरे साथ दो और साथी भी थे। सौभाग्य से अगले दिन बसंत पंचमी थी। मैंने मोदी जी को याद दिलाया और उन्होंने तुरंत ट्वीट कर सर छोटूराम को याद किया। इतना बड़ा नाम है सर छोटूराम का। उनका नाम लेते ही स्वतः ही श्रद्धा से सिर झुक जाता है।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।